SUPPORT MATERIAL

CLASS-X
SUBJECT – PAINTING
(Hindi Medium)

An Educational Support Initiative by:
NIOS Project, DoE, GNCTD

पांडुरंग के. पोले, भा.प्र.से
सचिव (शिक्षा)

PANDURANG K. POLE, IAS
SECRETARY (Education)

सत्यमेव जयते

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार
पुराना सचिवालय, दिल्ली–110054
दूरभाष: 011–23890187, 23890119
Government of National Capital Territory of Delhi
Old Secretariat, Delhi-110054
Phone: 23890187, 23890119
E-mail : sccyedu@nic.in

D.O. NO. : 1579/NIOS/P

Date : 23.12.2025

(MESSAGE)

"The highest education is that which does not merely give us information but makes our life in harmony with all existence." - Rabindranath Tagore

In the pursuit of equitable and quality education, the NIOS Project team of DoE has undertaken the initiative to develop this specially designed Support Material for the learners who require additional guidance. This comprehensive resource has been thoughtfully designed to bridge learning gaps, cater to the diverse needs of our students and foster academic excellence. By providing a structured framework for learning, this material aims to empower students to take ownership of their educational journey and achieve their full potential.

A lot of hand work has gone into the preparation of this material. I would like to express my sincere appreciation to all the teachers and the Subject Experts of CAU for writing and editing this material. I encourage all students and teachers to utilize this resource effectively.

I wish all the students of this project success, happiness and fulfilment.

(Pandurang K. Pole)

VEDITHA REDDY, IAS
Director, Education & Sports

सत्यमेव जयते

Directorate of Education
Govt. of NCT of Delhi
Room No. 12, Old Secretariat
Near Vidhan Sabha,
Delhi-110054
Ph.: 011-23890172
E-mail : diredu@nic.in

1580/NIOS/P
Dated- 23.12.2025

MESSAGE

"Education is the most powerful weapon which you can use to change the world." - **Nelson Mandela**.

It gives me immense pleasure to introduce this Support Material developed by the NIOS Project Branch of DoE in collaboration with a selected team of NIOS teachers and meticulously reviewed by the subject teams of CAU, DoE for the students of Class X of NIOS Project of DoE.

This comprehensive resource is a testimony of our commitment to providing quality education and ensuring that every student has access to the resources they need to succeed.

The Directorate of Education has always strived to create an environment that fosters academic excellence, creativity, and innovation. This Support Material is a significant step towards achieving this goal, as it provides students with a structured framework for learning and assessment.

Our teachers play a pivotal role in guiding and supporting students and I urge them to use this material to provide targeted support to NIOS students.

Let us work together to create a supportive learning environment and I am confident that this support material will play a significant role in achieving this goal.

Veditha

(VEDITHA REDDY, IAS)

NIOS Project
Directorate of Education
Govt. of NCT, Delhi

Support Material

Class-X

Subject- Painting

Under the Guidance of

Shri Pandurang K. Pole

Secretary (Education)

Smt. Veditha Reddy

Director (Education)

Shri Vikas Kalia

Addl. DE (Patrachar/NIOS Project)

Coordinators

Dr. Rajvir Singh
DDE (Patrachar/NIOS Project)

Dr. Savita Yadav
OSD (NIOS Project)

LIST OF GROUP LEADER AND SUBJECT EXPERTS
<u>FOR PREPARATION & REVIEW OF SUPPORT MATERIAL</u>

Class- X
Subject- Painting

Group Leader

Sl. No.	Name & Emp. ID.	Designation	Branch/School Name & ID
1	Mr. Manoj Kumar (20005076)	Principal	GBSSS, Site-II, Hari Nagar Clock Tower-1514112

Assistant Coordinator

Sl. No.	Name & Emp. ID.	Designation	Branch Name
1	Ms. Neha Chaudhary (20161480)	TGT	NIOS Project,DoE

Content Preparation Team

Sl. No.	Name & Emp. ID.	Designation	Branch/School Name & ID
1	Mr. Raj Kumar Ghosh (20080313)	TGT Drawing	DBRA, SoSE, Raj Niwas Marg-1207261
2	Ms. Shivika (2017141404)	TGT Drawing	GGSSS, Panama Building, Jama Masjid-2127023
3	Ms. Sushmita (2017058944)	TGT Drawing	Baba Ramdev GSKV, Prasad Nagar-2128020
4	Ms. Sheeba (2017086887)	TGT Drawing	SKV, Vivek Vihar-1001022

Content Review Team

Sl. No.	Name & Emp. ID.	Designation	Branch/School Name & ID
1	Mr. Suresh Kumar (19940510)	Lect. Fine Arts	SCAV CM Shri School, Inderpuri-1720121
2	Ms. Gunjan Singhal Singh (20093184)	TGT Drawing	Govt. Co-Ed SSS, Kanganheri-1821034

अनुक्रमणिका

पाठ 1 **पृष्ठ 1–6**

3000 ईसा पूर्व से 600 ईस्वी तक कला का इतिहास और मूल्यांकन
1.1 नृत्य करती हुई लड़की
1.2 रामपुरवा बुल कैपिटल
1.3 अश्वेत राजकुमारी (ब्लैक प्रिंसेस)
प्रश्न और उत्तर

पाठ 2 **पृष्ठ 7–11**

7वीं ई. से 12वीं ई. तक कला का इतिहास और मूल्यांकन
2.1 अर्जुन की चिंतन या गंगावतरण
2.2 गोवर्धन पर्वत को उठाते हुए कृष्ण
2.3 कोणार्क की सुरसुंदरी
प्रश्न और उत्तर

पाठ 3 **पृष्ठ 12–16**

13वीं शताब्दी ई. से 18वीं शताब्दी ई. तक कला का इतिहास और मूल्यांकन।
3.1 श्रंगार
3.2 जैन लघु चित्र
3.3 रासलीला
प्रश्न और उत्तर

पाठ 4 **पृष्ठ 17–22**

भारत की लोक कला
4.1 कोलम
4.2 फुलकारी
4.3 कंथा कढ़ाई
प्रश्न और उत्तर

पाठ – 5 **पृष्ठ 23–28**

पुनर्जागरण (नवजागरण)
5.1 वीनस का जन्म
5.2 मोनालिसा
5.3 पीएटा
5.4 रात्रि प्रहरी (द नाइट वॉच)
प्रश्न और उत्तर

पाठ – 6 **पृष्ठ 29–33**

प्रभाववाद
6.1 वाटर लिलीज
6.2 मौलिन डे लॉ गैलेत
6.3 डांस क्लास (नृत्य कक्षा)
6.4 स्टील लाइफ विद ओनियन्स
6.5 स्टारी नाइट
प्रश्न और उत्तर

पाठ – 7 **पृष्ठ 34–39**
घनवाद, अतियथार्थवाद और अमूर्त कला
7.1 वायलिन के साथ आदमी
7.2 स्मृति की दृढ़ता – 1931
7.3 काली रेखाएँ
प्रश्न और उत्तर

पाठ – 8 **पृष्ठ 40–44**
समकालीन भारतीय कला के पुरोगामी
8.1 हंस दमयंती
8.2 ब्रह्मचारीज
8.3 द एट्रियम
प्रश्न और उत्तर

पाठ – 9 **पृष्ठ 45–50**
समकालीन भारतीय कला
9.1 व्हर्लपूल
9.2 मेडिवल सैंटस
9.3 वर्ड अंड सिंबल्स
9.4 लाल रंग में परिदृश्य (लैंडस्केप इन रेड)
प्रश्न और उत्तर

नमूना प्रश्न पत्र – I **पृष्ठ 51–52**
नमूना प्रश्न पत्र – II **पृष्ठ 53–55**
नमूना प्रश्न पत्र – III **पृष्ठ 56–58**

पाठ-1

3000 ई.पू. से 600 ई. तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन

सिंधु घाटी सभ्यता

- सिंधु घाटी सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता भी कहा जाता है।
- यह सभ्यता लगभग 2500 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में रही।
- मोहरें, आभूषण और मिट्टी की मूर्तियाँ प्रसिद्ध थीं।
- टेराकोटा और पत्थर की कलाकृतियाँ प्रमुख थीं।
- यह सभ्यता ग्रेट बाथ (विशाल स्नानागार) के लिए प्रसिद्ध है।
- मोहरों पर पशुओं और देवताओं की आकृतियाँ उकेरी गई थीं।

1.1 नृत्य करती हुई लड़की

- यह मूर्ति मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुई थी।
- यह कांस्य की बनी हुई है।
- इसकी ऊँचाई लगभग 4.1 इंच (10.5 सेमी) है।
- वह एक हार पहने हुए है और उसका दायाँ हाथ चूड़ियों से भरा हुआ है।
- उसकी मुद्रा गुजरात और राजस्थान के आदिवासी क्षेत्रों में देखी जाने वाली पारंपरिक मुद्राओं से मिलती-जुलती है।
- उसका दायाँ हाथ कमर पर और बायाँ हाथ जांघ पर रखा हुआ है।
- उसके बालों का जूड़ा बंधा हुआ है।
- यह मूर्ति राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में रखी गई है।

मौर्य वंश

- मौर्य वंश की स्थापना चंद्रगुप्त मौर्य ने की थी।
- अशोक, चंद्रगुप्त मौर्य के पोते थे।
- अशोक ने कई स्तूप, शिलालेख और स्तंभ बनवाए, जो बौद्ध धर्म के इतिहास को दर्शाते हैं।
- साँची का महान स्तूप, मूर्तियाँ और अशोक स्तंभ इस युग की प्रमुख धरोहरें हैं।

1.2 रामपुरवा बुल कैपिटल

- यह मौर्य काल की तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व की प्रसिद्ध कलाकृति है।
- यह बिहार के रामपुरवा जिले में प्राप्त हुई थी।
- यह मूर्ति चमकदार बलुआ पत्थर से बनी है।
- इसकी ऊँचाई लगभग 7 फीट है।
- बैल की मूर्ति के नीचे उल्टा कमल बना हुआ है।
- शीर्ष के आधार पर चारों ओर वृक्षों और पौधों की नक्काशी की गई है।
- वर्तमान में यह बैल शीर्ष राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में रखा गया है।

गुप्त काल

- भारतीय कला के इतिहास में गुप्त काल को स्वर्ण युग कहा जाता है।
- इस काल में मूर्तिकला, चित्रकला और मंदिर वास्तुकला में महत्वपूर्ण विकास हुआ।
- प्रमुख कला केंद्र मथुरा, सारनाथ, उज्जैन और कुछ अन्य स्थान थे।
- इस काल की धार्मिक कला में हिंदू, बौद्ध और जैन संप्रदायों का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है।
- अजंता और बाघ की गुफाओं में बनी प्रसिद्ध चित्रकलाएँ भी इसी काल में निर्मित हुई थीं।

1.3 अश्वेत राजकुमारी (ब्लैक प्रिंसेस)

- यह एक प्रसिद्ध भित्ति चित्र (फ्रेस्को) है जो अजंता की गुफा संख्या 16 में पाया गया है।
- अजंता की गुफाएँ महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले के पास स्थित हैं।
- इस भित्ति चित्र में टेम्परा तकनीक का प्रयोग किया गया है।
- इसका आकार लगभग 20 फीट x 6 फीट है।
- यह चित्र गुप्त-वाकाटक काल के दौरान 5वीं से 6वीं शताब्दी ईस्वी के बीच बनाया गया था।
- यह चित्र एक गहरे लाल रंग की सुंदर युवती का है।
- यह उसकी मृत्यु का अत्यंत संवेदनशील और दुखद चित्रण है।
- इसमें रंगों का सामंजस्यपूर्ण प्रयोग किया गया है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न/उत्तर

प्रश्न: नृत्य करती लड़की की धातु मूर्ति कहाँ मिली थी?

उत्तर: मोहनजोदड़ो।

प्रश्न: नृत्य करती लड़की की ऊँचाई कितनी है?

उत्तर: लगभग 4.1 इंच (10.5 सेमी)।

प्रश्न: 'नृत्य करती लड़की खड़ी है या बैठी है?

उत्तर: खड़ी है।

प्रश्न: नृत्य करती लड़की किस हाथ में चूड़ियाँ पहने हुए है?

उत्तर: बाएँ हाथ में।

प्रश्न: नृत्य करती लड़की के बाल कैसे बंधे हैं?

उत्तर: जूड़े में।

प्रश्न: नृत्य करती लड़की की मूर्ति कहाँ रखी गई है?

उत्तर: राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली।

प्रश्न: नृत्य करती लड़की की मूर्ति किस धातु की बनी है?

उत्तर: कांस्य।

प्रश्न: नृत्य करती लड़की की मुद्रा वर्तमान में किन राज्यों की जनजातियों से मिलती-जुलती है?

उत्तर: गुजरात और राजस्थान।

प्रश्न: बुल कैपिटल कहाँ मिला था?

उत्तर: रामपुरवा (बिहार)।

प्रश्न: बुल कैपिटल का आधार कैसा है?

उत्तर: उल्टा कमल।

प्रश्न: बुल कैपिटल के अभिकोष पर क्या रखा गया है?

उत्तर: शाही बैल।

प्रश्न: बुल कैपिटल वर्तमान में कहाँ रखा गया है?

उत्तर: राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली।

प्रश्न: बुल कैपिटल की विशेषता क्या है?

उत्तर: चमकदार पत्थर।

प्रश्न: अजंता की गुफाएँ कहाँ स्थित हैं?

उत्तर: महाराष्ट्र, औरंगाबाद के पास।

प्रश्न: अजंता की किस अवस्था में भगवान बुद्ध को प्रतीक रूप में दर्शाया गया था?

उत्तर: हीनयान चरण

प्रश्न: अश्वेत राजकुमारी (ब्लैक प्रिंसेस) चित्र में किस प्रकार के रंगों का प्रयोग हुआ है?

उत्तर: पृथ्वी रंग/ सहज रंग

प्रश्न: अश्वेत राजकुमारी (ब्लैक प्रिंसेस) किस चरण में बनाई गई थी?

उत्तर: महायान चरण

प्रश्न: अश्वेत राजकुमारी (ब्लैक प्रिंसेस) किस युग से संबंधित है?

उत्तर: दूसरी से छठी शताब्दी, गुप्त-वाकाटक काल।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1: सिंधु घाटी सभ्यता के कार्यों के बारे में संक्षेप में लिखिए।

उत्तर:

- सिंधु घाटी सभ्यता भारत की सबसे प्राचीन सभ्यता है।
- इस सभ्यता के मुख्य स्थल मोहनजोदड़ो और हड़प्पा हैं, जो अब पाकिस्तान में स्थित हैं।
- इस सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है।
- यह सभ्यता लगभग 2500 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व तक फली-फूली।
- इस काल में कई कलाकृतियाँ और पुरातात्विक अवशेष प्राप्त हुए हैं, जैसे मुहरें, मूर्तियाँ, खिलौने, मिट्टी के बर्तन, आभूषण, और वस्त्र निर्माण व अन्य उपयोगी वस्तुओं के उपकरण।

प्र.2: नृत्य करती हुई लड़की की मूर्ति की मुद्रा/विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

- नृत्य करती हुई लड़की की मूर्ति मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुई थी। इसकी ऊँचाई लगभग 4.1 इंच (10.5 सेमी) है।
- यह मूर्ति पतली और लंबी दिखाई देती है।
- यह मूर्ति कांस्य धातु से बनी है।
- इसे त्रिभंग (तीन मोड़ों वाली) मुद्रा में दर्शाया गया है।
- उसके बाएँ हाथ में कोहनी तक चूड़ियाँ/कंगन पहने हुए हैं।
- उसके बालों का जूड़ा बना हुआ है।
- उसका दायाँ हाथ कमर पर रखा है और बायाँ हाथ जांघ पर टिका हुआ है।
- यह मूर्ति राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में रखी गई है।

प्र० 3: गुप्त युग को भारतीय इतिहास का 'स्वर्णिम युग' क्यों कहा जाता है?

उत्तर:

- गुप्त शासकों ने कला को उन्नति के शिखर तक पहुँचाया।
- इस अवधि में मूर्तिकला, चित्रकला, वास्तुकला और संगीत कला का अद्भुत विकास हुआ।
- बड़ी संख्या में देवी-देवताओं की मूर्तियां बनाई गईं जिनका स्थान अपनी सुन्दरता के लिए विश्व के इतिहास में अद्वितीय है।
- इस काल में बुद्ध, वैष्णव, शैव, जैन सम्प्रदाय की भी मूर्तियाँ बनाई गईं।
- इन विशेषताओं के आधार पर गुप्तकाल को प्राचीन भारत का 'स्वर्णिम युग' कहा जाता है।

प्र० 4: अजंता की गुफाएँ कहाँ हैं? इन गुफाओं के बारे में संक्षेप में लिखिए।

उत्तर:

- अजंता की गुफाएँ महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में हैं। यह गुफाएँ कुल मिलकर 30 हैं।
- इन गुफाओं को दो भागों में बांटा गया है – चैत्य और विहार।
- पूजा के लिए चैत्य गुफाओं का और विश्राम के लिए विहार गुफाओं का प्रयोग किया जाता है।
- अजंता की कलाकृतियाँ दो चरणों में पूरी हुईं – हीनयान चरण और महायान चरण।
- हीनयान चरण जिसमें भगवान बुद्ध को प्रतीकों के माध्यम से दर्शाया गया है और महायान चरण में भगवान बुद्ध की मानवीय रूप में दिखाया गया है।
- अजंता के चित्रकारों ने परम्परावादी 'टेम्परा पद्धति' का प्रयोग किया है।
- अजंता की दीवार पर किया हुआ भित्ति चित्र का विषय मूलरूप से धार्मिक था।

बहुविकल्पीय प्रश्न:

नीचे लिखे प्रश्नों का सही उत्तर छाँटकर लिखिए।

(i) नाचती हुई लड़की की मूर्ति हमें कहाँ से प्राप्त हुई है।

(A) हड़प्पा

(B) लोथल

(C) मोहनजोदाड़ो

(D) रोपड़

उत्तर: (c) मोहनजोदाड़ो

(ii) किस चरण में भगवान बुद्ध को प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है।

(A) वाकाटक

(B) हीनयान

(C) महायान

(D) व्रजयान

उत्तर: (B) हीनयान

(iii) बुल कैपिटल की अति विशेषता क्या है।

(A) पॉलिश

(B) पूरवी कँगनी

(C) निः वस्त्र

(D) गर्दन

उत्तर: (A) पॉलिश

रिक्त स्थान भरें।

(i) अजंता में कुल _______ गुफाएँ हैं।

(ii) अजंता की कलाकृतियाँ _______ चरणों में पूर्ण हुई है।

(iii) अजंता की गुफाएँ _______ में स्थित हैं।

(iv) भगवान बुद्ध को _______ _______ चरण से दिखाया गया है।

(v) अजंता के चित्रकारों ने _______ तकनीक का प्रयोग किया है।

उत्तर

(i) 30 गुफाएँ

(ii) दो

(iii) महाराष्ट्र, औरंगाबाद

(iv) मानवीय, महायान

(v) टेम्परा पद्धति

पाठ-2

7वीं ई. से 12वीं ई. तक कला का इतिहास तथा मूल्यांकन

संक्षिप्त परिचय

- गुप्त काल के बाद का समय भारत में मंदिर वास्तुकला और मूर्तिकला की प्रगति के लिए जाना जाता है।
- दक्षिण भारत में पल्लव, चोल, होयसल और पूर्वी भारत में पाल, सेन और गंग वंशों ने इस कला को संरक्षण दिया।
- पल्लव और चालुक्य वंश मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध हैं, जबकि चोल और होयसाल वंश मंदिर निर्माण के लिए जाने जाते हैं।
- दक्षिण भारत में महाबलीपुरम या मामल्लपुरम में पंचरथ और मंडप संरचनाएँ देखी जा सकती हैं।
- चोल कला कांस्य मूर्तियों और धातु शिल्प में उत्कृष्टता प्राप्त करती है।

2.1 अर्जुन का चिंतन या गंगावतरण

माध्यम: पत्थर

काल: पल्लव काल

- यह मूर्ति 7वीं शताब्दी के पल्लव काल की मूर्तिकला का उदाहरण है।
- यह मूर्ति मामल्लपुरम (चेन्नई) में स्थित है।
- यह एक विशाल चट्टान पर एक ही पत्थर से बनाई गई है।
- यह उभरी हुई मूर्ति दो विशाल शिलाओं पर बनी है, जिसमें पूरी रचना में प्रवाह दिखाई देता है।
- इसमें देवता, गंधर्व, ऋषि, मनुष्य और पशुओं की जीवन आकार की मूर्तियाँ हैं, जो उड़ते हुए दिखाए गए हैं।
- चोल वंश के प्रमुख मंदिर:
    - गंगैकोंडाचोलपुरम मंदिर
    - बृहदेश्वर मंदिर
- गंग वंश के प्रमुख मंदिर (ओडिशा में):
    - मुक्तेश्वर
    - लिंगराज
    - राजारानी
- कुछ विद्वानों के अनुसार इस मूर्ति का नाम "गंगावतरण" है, जिसमें शिव को गंगा की धारा को अपने जटाओं में ग्रहण करते हुए दिखाया गया है।
- अन्य विद्वान इसे "अर्जुन का चिंतन " कहते हैं, क्योंकि एक पुरुष आकृति जिसे वे अर्जुन मानते हैं ध्यान की मुद्रा में एक छोर पर दिखाई गई है।

2.2 गोवर्धन पर्वत को उठाते हुए कृष्ण

माध्यम: पत्थर

काल: होयसल काल

- यह मूर्ति होयसाल शिल्पकला की कोमल और जटिल नक्काशी का उत्कृष्ट उदाहरण है।
- पूरी घटना को परतों में दर्शाया गया है।
- कृष्ण को केंद्रीय आकृति के रूप में दर्शाया गया है, उनके चारों ओर मनुष्य और पशु विभिन्न परतों में हैं, जिससे कथा का रोचक चित्रण होता है।
- कृष्ण को वीर मुद्रा में दिखाया गया है।
- वर्तमान में जिसे हेलिबिड कहा जाता है, वह होयसाल वंश की राजधानी मानी जाती है।
- हलेबिड का पुराना नाम "द्वार समुद्र" था।

2.3 कोणार्क की सुरसुंदरी

माध्यम: पत्थर

काल: गंग राजवंश, 12वीं शताब्दी

- कोणार्क की सुरसुंदरी 12वीं शताब्दी की मूर्ति है, जिसे गंग वंश ने बनवाया था।
- कोणार्क का सूर्य मंदिर, जो ओडिशा की महान वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है, राजा नरसिंहदेव प्रथम द्वारा बनवाया गया था।
- यह मंदिर भारत के पूर्वी तट पर पुरी के पास स्थित है।
- यह मंदिर अपने विशाल आकार और जीवन से बड़े मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है।
- यह मूर्ति काले पत्थर से बनी है।
- यह मूर्ति सूर्य मंदिर में स्थित है।
- सुरसुंदरी को ढोल बजाते हुए दर्शाया गया है।
- स्तनों के बीच गहनों की कोमल नक्काशी इस मूर्ति की कोमलता को बढ़ाती है।
- बड़ी मुस्कान वाली आकृति के बावजूद, अंगों की लयात्मक गति और सिर का हल्का झुकाव इसे जीवंत बनाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न:

प्र.1: अर्जुन का चिंतन किस वंश के अंतर्गत बनाई गई थी?

उत्तर: पल्लव वंश

प्र.2: अर्जुन का चिंतन कहाँ स्थित है?

उत्तर: महाबलीपुरम या मामल्लापुरम

प्र.3: अर्जुन का चिंतन का दूसरा नाम क्या है?

उत्तर: गंगावतरण

प्र.4: गंगावतरण की मूर्ति किस माध्यम से बनी है?

उत्तर: पत्थर (दो विशाल शिलाओं पर उकेरी गई)

प्र.5: हलेबिड का प्राचीन नाम क्या था?

उत्तर: द्वार समुद्र

प्र.6: 'गोवर्धन पर्वत उठाते कृष्ण' की मूर्ति कहाँ से प्राप्त हुई?

उत्तर: बेलूर

प्र.7: होयसाल काल का एक प्रमुख मंदिर स्थल बताइए।

उत्तर: बेलूर

प्र.8: होयसाल वंश की वर्तमान राजधानी क्या है?

उत्तर: हलेबिड

प्र.9: कोणार्क का सूर्य मंदिर किसने बनवाया था?

उत्तर: नरसिंहदेव प्रथम

प्र.10: सुरसुंदरी की मूर्ति में वह क्या बजाते हुए दिखाई गई है?

उत्तर: ढोल

प्र.11: सुरसुंदरी की मूर्ति किस पत्थर से बनी है?

उत्तर: काले पत्थर से

प्र.12: कोणार्क का सूर्य मंदिर कहाँ स्थित है?

उत्तर: ओडिशा

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:

प्र.1: अर्जुन का चिंतन की मूर्ति के बारे में संक्षेप में लिखिए। यह कहाँ स्थित है?

उत्तर:

- अर्जुन का चिंतन मामल्लापुरम (चेन्नई) में स्थित है।
- यह मूर्ति 7वीं शताब्दी के पल्लव काल की है।
- इसे गंगावतरण भी कहा जाता है क्योंकि मान्यता है कि राजा भगीरथ की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने गंगा को धरती पर उतारा।
- कुछ विद्वानों के अनुसार इसे 'अर्जुन का चिंतन' कहा जाना चाहिए क्योंकि एक पुरुष आकृति ध्यान की मुद्रा में दिखाई गई है।

प्र.2: होयसाल काल की गोवर्धन पर्वत उठाते कृष्ण की मूर्ति के बारे में संक्षेप में लिखिए।

उत्तर:

- यह मूर्ति होयसाल काल की है।
- इसमें पूरी घटना को विभिन्न परतों में दर्शाया गया है।

- कृष्ण को मूर्ति के केंद्र में वीर मुद्रा में दिखाया गया है।
- यह मूर्ति बेलूर से प्राप्त हुई है।
- मूर्ति के चारों ओर पशुओं को भी दर्शाया गया है।

प्र.3: कोणार्क के सूर्य मंदिर के बारे में संक्षेप में लिखिए?

उत्तर:

- कोणार्क का सूर्य मंदिर गंगा वंश के राजा नरसिंहदेव प्रथम द्वारा ओडिशा के पुरी के पास बनवाया गया था।
- यह मंदिर रथ के आकार में बना है।
- यह मंदिर अपनी उत्कृष्ट वास्तुकला और मूर्तिकला के लिए विश्व प्रसिद्ध है।
- यद्यपि इसका बहुत सा भाग नष्ट हो चुका है, फिर भी शेष भाग उस युग के कलाकारों की महानता को दर्शाता है।

प्र.4: महाबलीपुरम में क्या है?

उत्तर:

- दक्षिण भारत के महाबलीपुरम या मामल्लापुरम में पंचरथ और मंडप संरचनाएँ देखने को मिलती हैं।
- अर्जुन की चिंतन या गंगावतरण भी यहाँ स्थित है।

बहुविकल्पीय प्रश्न:

प्र.1: कोणार्क का सूर्य मंदिर किसने बनवाया था?

1. गंग राजवंश, नरसिंहदेव प्रथम
2. होयसाल वंश
3. पल्लव वंश
4. चोल वंश

उत्तर: a) गंग राजवंश, नरसिंहदेव प्रथम

प्र.2: अर्जुन का चिंतन का दूसरा नाम क्या है?

1. ब्लैक प्रिंसेस
2. गंगावतरण
3. हलेबिड
4. कांचीपुरम

उत्तर: b) गंगावतरण

प्र.3: सुरसुंदरी किस वाद्य यंत्र को बजाते हुए दिखाई गई है?

1. गिटार
2. ढोल
3. तबला
4. सितार

उत्तर: b) ढोल

सत्य / असत्य:

i) गुप्त वंश को स्वर्ण युग कहा जाता है।

उत्तर: सत्य

ii) सूर्य मंदिर बंगाल में स्थित है।

उत्तर: असत्य

iii) अर्जुन का चिंतन मूर्ति का दूसरा नाम गंगावतरण है।

उत्तर: सत्य

iv) पल्लव वंश की राजधानी महाबलीपुरम थी।

उत्तर: सत्य

पाठ-3
13वीं शताब्दी ई. से 18वीं शताब्दी ई. तक
कला का इतिहास तथा मूल्यांकन

संक्षिप्त परिचय

- इस शताब्दी ई. में बड़ी संख्या में सचित्र पांडुलिपियाँ तैयार की गईं।
- ये पांडुलिपियाँ हिंदू, जैन और बौद्ध जैसे विभिन्न धार्मिक संप्रदायों से संबंधित थीं।
- बंगाल, गुजरात और बिहार इस काल की प्रमुख चित्रित पांडुलिपियों के केंद्र थे।
- ये पांडुलिपियाँ ताड़पत्र पर लिखी जाती थीं।
- इस काल में भारत के कुछ क्षेत्रों में मंदिर वास्तुकला का भी विकास हुआ।
- इस काल के प्रमुख मंदिरों में माउंट आबू का दिलवाड़ा संगमरमर मंदिर और बंगाल व ओडिशा के टेराकोटा मंदिर अत्यंत सुंदर हैं।

3.1 श्रृंगार

शैली: गुलेर घराना
काल: 18वीं शताब्दी ई.
कलाकार: अज्ञात
माध्यम: टेम्परा

- गुलेर, कांगड़ा घाटी के पास एक छोटा राज्य था और पहाड़ी चित्रकला शैली का एक प्रमुख केंद्र था।
- गुलेर चित्रों में राधा-कृष्ण की दिव्य प्रेम कथा को दर्शाया गया है।
- इस चित्र में टेम्परा तकनीक का प्रयोग हुआ है।
- इसमें एक दुल्हन को विवाह के लिए सजाया जा रहा है।
- अग्रभूमि में एक दासी चंदन घिस रही है।
- दूसरी स्त्री दुल्हन के पाँव में पायल बाँध रही है।
- दो स्त्रियाँ खड़ी हैं — एक दर्पण पकड़े हुए है और दूसरी फूलों की माला बना रही है।
- एक महिला दुल्हन के बाल संवार रही है और एक सहायिका उसकी मदद कर रही है।
- एक वृद्ध महिला पूरे आयोजन की निगरानी कर रही है।

3.2 जैन लघुचित्र

- जैन लघुचित्रों का विकास भारत भर में 7वीं शताब्दी ई. से 10वीं शताब्दी ई. तक हुआ।
- जैन धर्मग्रंथ जैसे कि कल्पसूत्र और कालकाचार्य कथा में तीर्थंकरों — नेमिनाथ, ऋषभनाथ आदि की चित्रित छवियाँ मिलती हैं।
- इसके प्रमुख केंद्र पंजाब, बंगाल, ओडिशा, गुजरात और राजस्थान थे।
- ये पांडुलिपियाँ मुख्यतः ताड़पत्र पर बनाई जाती थीं।
- चित्रों में प्रयोग होने वाले रंग स्थानीय रूप से उपलब्ध खनिजों से बनाए जाते थे।
- लाल और पीला प्रमुख रंग थे, साथ ही सोना और चाँदी का भी प्रयोग होता था।

शीर्षक – **कल्पसूत्र**
काल: **15वीं शताब्दी**
शैली: **जैन पांडुलिपि चित्रकला**
माध्यम: **ताड़पत्र पर टेम्परा**

कल्पसूत्र चित्र की विशेषताएँ:

- यह चित्र जैन धार्मिक ग्रंथ "कल्पसूत्र" से लिया गया है, जो एक अनुष्ठान संबंधी ग्रंथ है।
- चित्र की रचना को कुछ वर्गों और आयतों में विभाजित किया गया है।
- चेहरों को प्रोफ़ाइल में दर्शाया गया है, लेकिन दोनों आँखें सामने से दिखाई देती हैं।
- प्रत्येक खंड कल्पसूत्र की कथा का अलग दृश्य प्रस्तुत करता है।
- स्त्री पात्रों को अत्यधिक आभूषणों से सजाया गया है।
- पुरुष, स्त्री और पशु आकृतियाँ लाल पृष्ठभूमि पर चित्रित हैं।
- चित्रों में सोने और नीला रंग का प्रयोग हुआ है, जिससे चित्र की भव्यता और समृद्धि बढ़ती है।-

3.3 रासलीला

शीर्षक: विष्णुपुर टेराकोटा
कलाकार: अज्ञात
स्थान: पंचमुरा मंदिर, विष्णुपुर, पश्चिम बंगाल

काल: लगभग 17वीं शताब्दी ई.

माध्यम: टेराकोटा टाइल्स

- विष्णुपुर पश्चिम बंगाल का एक छोटा नगर है, जहाँ कई छोटे मंदिर टेराकोटा टाइल्स से सजाए गए हैं।
- अधिकांश मंदिर शिव या विष्णु को समर्पित हैं।
- रासलीला राधा-कृष्ण और गोपियों के दिव्य प्रेम का उत्सव है।
- यह सुंदर पैनल एक वर्गाकार स्थान में तीन वृत्ताकार परतों में बना है।
- मध्य वृत्त में राधा-कृष्ण और एक गोपी की आकृति है, अन्य दो वृत्तों में हाथों में हाथ डाले हुए गोपियों की कतारें हैं।
- चारों कोनों में मानव, पशु और पक्षियों की आकृतियाँ सजाई गई हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न:

1. पहाड़ी चित्रकला की उत्पत्ति के स्थान कौन-कौन से हैं?
   उत्तर: **गुलेर, कांगड़ा**
2. गुलेर चित्रकला का सबसे प्रिय विषय क्या है?
   उत्तर: **राधा-कृष्ण की कथा**
3. 'श्रृंगार' चित्र की अग्रभूमि में दो स्त्रियाँ क्या कर रही हैं?
   उत्तर: **एक पायल बाँध रही है और दूसरी चंदन घिस रही है।**
4. जैन लघुचित्र कब विकसित हुए?
   उत्तर: **7वीं से 15वीं शताब्दी ई. के बीच**
5. जैन लघुचित्रों का माध्यम क्या है?
   उत्तर: **ताड़पत्र**
6. जैन लघुचित्रों में प्रमुख रंग कौन से हैं?
   उत्तर: **लाल, पीला, सोना, चाँदी**
7. जैन लघुचित्र किस पर आधारित हैं?
   उत्तर: **जैन धर्मग्रंथों पर, जिनमें तीर्थंकरों जैसे पार्श्वनाथ, नेमिनाथ, ऋषभनाथ आदि की छवियाँ होती हैं।**
8. 'रासलीला' पैनल के चारों कोनों को कैसे सजाया गया है?
   उत्तर: **मानव, पशु और वनस्पति आकृतियों से**
9. विष्णुपुर के टेराकोटा मंदिरों में कौन-कौन सी आकृतियाँ दर्शाई गई हैं?
   उत्तर: **शिव, दुर्गा, राधा-कृष्ण और रामायण-महाभारत के पात्र**
10. विष्णुपुर कहाँ स्थित है?
    उत्तर: **पश्चिम बंगाल में**

11. विष्णुपुर के मंदिर कैसे सजाए गए हैं?

    उत्तर: **टेराकोटा टाइल्स से।**

12. विष्णुपुर टेराकोटा शैली का विकास किस काल में हुआ?

    उत्तर: **17वीं से 18वीं शताब्दी ई. में**

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:

प्र.1: श्रृंगार चित्र की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

- यह चित्र गुलेर घराने से संबंधित है।
- इसमें टेम्परा तकनीक का प्रयोग हुआ है।
- चित्र में एक दुल्हन को विवाह के लिए सजाया जा रहा है।
- अग्रभूमि में एक दासी चंदन घिस रही है।
- एक महिला दुल्हन के पाँव में पायल बाँध रही है।
- दो स्त्रियाँ खड़ी हैं — एक दर्पण पकड़े हुए और दूसरी माला बना रही है।
- एक महिला बाल संवार रही है और एक सहायिका उसकी मदद कर रही है।
- एक वृद्ध महिला पूरे आयोजन की निगरानी कर रही है।

प्र.2: जैन लघुचित्रों की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर:

- इनका आरंभ 7वीं शताब्दी में हुआ और 15वीं शताब्दी तक चला।
- पंजाब, बंगाल, ओडिशा, गुजरात और राजस्थान इसके प्रमुख केंद्र थे।
- ये चित्र ताड़पत्र पर बनाए जाते थे।
- रंग स्थानीय रूप से उपलब्ध खनिजों से बनाए जाते थे।
- लाल और पीला प्रमुख रंग थे, साथ ही सोना और चाँदी का भी प्रयोग होता था।
- चेहरे प्रोफ़ाइल में होते थे, लेकिन दोनों आँखें सामने से दिखाई जाती थीं।
- रचना वर्गों और आयतों में विभाजित होती थी।

प्र.3: टेराकोटा क्या है? किसी एक मंदिर का वर्णन कीजिए जो टेराकोटा टाइल्स से सुसज्जित है।

उत्तर:

- टेराकोटा का अर्थ है — पकाई हुई मिट्टी।
- पंचमुरा मंदिर, विष्णुपुर में हैं, जो टेराकोटा टाइल्स से सुसज्जित है।
- विष्णुपुर पश्चिम बंगाल का एक छोटा नगर है।
- वहाँ के मंदिर दीवारों पर टेराकोटा टाइल्स चिपकाकर सजाए गए हैं।
- रासलीला पैनल में राधा-कृष्ण और गोपियों के प्रेम को दर्शाया गया है।
- यह पैनल एक वर्गाकार स्थान में तीन वृत्तों में बना है।

- मध्य वृत्त में राधा-कृष्ण और एक गोपी की आकृति है।

रिक्त स्थान भरिए:

1. पश्चिम बंगाल का एक नगर जहाँ _______________ स्थित है।

   उत्तर: विष्णुपुर
2. कई छोटे मंदिर _______________ टाइल्स से सजाए गए हैं।

   उत्तर: टेराकोटा
3. अधिकांश मंदिर _______________ या _______________ को समर्पित हैं।

   उत्तर: शिव, विष्णु
4. _______________, _______________ और _______________ की आकृतियाँ रामायण और महाभारत के पात्र

उत्तर: शिव, दुर्गा और राधा-कृष्ण

5. मंदिर की वास्तुकला ___________ या ___________ मंजिलों पर आधारित है।

उत्तर: एक या दो

सत्य / असत्य:

i) 12वीं शताब्दी ई. में बड़ी संख्या में पांडुलिपियाँ तैयार की गईं।

उत्तर: **सत्य**

ii) जैन पांडुलिपियाँ ताड़पत्र पर लिखी जाती थीं।

उत्तर: **सत्य**

iii) कल्पसूत्र बौद्ध धर्म का धार्मिक ग्रंथ है।

उत्तर: **असत्य**

iv) जैन शैली पूरी तरह से क्यूबिज़्म शैली पर केंद्रित है।

उत्तर: **असत्य**

पाठ–4

भारत की लोककला

संक्षिप्त परिचय

- किसी विशेष समुदाय या क्षेत्र के लोगों द्वारा की जाने वाली कला को **लोक कला** कहा जाता है।
- लोक कला किसी समुदाय की सामूहिक रचनात्मकता, कल्पना और आस्था की अभिव्यक्ति होती है।
- यह कला परंपराओं पर आधारित होती है।
- लोक कलाकारों ने घरों, दीवारों, दरवाज़ों और आंगनों को सजाने के लिए इस कला का निर्माण किया।
- भारत में कई प्रसिद्ध लोक कलाएँ हैं जैसे — कलमकारी, मधुबनी, फुलकारी आदि।
- भारतीय लोक कला को तीन भागों में बाँटा गया है:
    1. **धार्मिक या अनुष्ठानिक लोक कला** – जैसे पट्टचित्र, पिछवाई, अल्पना, कोलम आदि।
    2. **उपयोगी लोक कला** – जैसे मिट्टी के बर्तन, लकड़ी के खिलौने आदि।
    3. **व्यक्तिगत लोक कला** – मनोरंजन और आनंद के लिए बनाई गई कला, जिससे नई लोक कलाएँ जन्म लेती हैं।

4.1 कोलम

शीर्षक: **कलश के साथ फर्श चित्रकारी**

शैली: **कोलम**

कलाकार: **अज्ञात गृहिणी**

माध्यम: **चावल का पेस्ट और रंग**

काल: **1992**

स्थान: **तंजावुर, तमिलनाडु**

- कोलम एक पारंपरिक दक्षिण भारतीय लोक कला है जो फर्श पर बनाई जाती है।
- इसे अल्पना या रंगोली भी कहा जाता है।
- पोंगल और अन्य त्योहारों पर घरों और पूजा स्थल के सामने इसे सजाया जाता है।
- कोलम को शुभता और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है।

प्रक्रिया:

- पहले फर्श को साफ़ कर पानी से गीला किया जाता है।
- फिर चावल के आटे का पेस्ट तैयार किया जाता है।
- अंगूठे और तर्जनी के बीच पेस्ट लेकर रेखाएँ बनाई जाती हैं।
- बिंदु बनाकर उन्हें जोड़कर आकृतियाँ बनाई जाती हैं।
- इसमें मुख्यतः वृत्त, वर्ग, त्रिभुज जैसी ज्यामितीय आकृतियाँ होती हैं।
- लाल, नारंगी, नीला, पीला, गुलाबी जैसे चमकीले रंगों का प्रयोग होता है।

4.2 फुलकारी

शीर्षक: **चादर**

कलाकार: **अज्ञात**

शैली: **फुलकारी**

माध्यम: **रंगीन धागों से कपड़े पर कढ़ाई**

काल: **समकालीन**

- फुलकारी का अर्थ है "फूलों का काम"।
- यह पंजाब की महिलाओं द्वारा की जाने वाली पारंपरिक कढ़ाई है।
- इसे छोटे-बड़े कपड़ों पर किया जाता है — जैसे वस्त्र, चादर आदि।
- इसमें पारंपरिक ज्यामितीय आकृतियाँ बनाई जाती हैं।
- ये आकृतियाँ लाल कपड़े पर सुनहरे और चाँदी जैसे सफेद धागों से कढ़ी जाती हैं।
- पूरे डिज़ाइन में सुनहरा रंग प्रमुख होता है।

4.3 कंथा कढ़ाई

शीर्षक: **बंगाल की कंथा**

कलाकार: **अज्ञात**

शैली: **कंथा कढ़ाई**

माध्यम: **रेशम पर रंगीन धागों से कढ़ाई**

काल: **समकालीन**

- यह कंथा एक साड़ी है जिसे पारंपरिक शैली में कढ़ा गया है।
- बंगाल में कंथा कढ़ाई और रजाई बनाने की समृद्ध लोक परंपरा है।
- पुरानी साड़ियों और धोती से कंथा बनाई जाती है।
- रजाई, विवाह चटाई, थैले, दर्पण और आभूषण लपेटने के कपड़े कंथा से बनाए जाते हैं।
- इसमें सफेद, हरा, बैंगनी, लाल, भूरा, पीला और काला रंग प्रयोग होता है।
- ग्रामीण महिलाएँ अनपढ़ होती थीं, इसलिए वे अपने आस-पास के जीवन से प्रेरणा लेकर कढ़ाई करती थीं।
- कंथा के डिज़ाइन में मानव और पशु आकृतियाँ होती हैं।

रिक्त स्थान भरिए:

1. किसी विशेष समुदाय या क्षेत्र के लोगों द्वारा की जाने वाली कला को __________ कहा जाता है।
   उत्तर: **लोक कला**
2. लोक कला सामान्यतः __________ पर आधारित होती है।
   उत्तर: **परंपरा**

3. भारत में प्रसिद्ध लोक कलाएँ हैं — __________, __________, __________ आदि।

   उत्तर: **कलमकारी, मधुबनी, फुलकारी**

4. भारतीय लोक कला को __________ भागों में बाँटा गया है।

   उत्तर: **तीन (धार्मिक, उपयोगी, व्यक्तिगत)**

लघु उत्तरीय प्रश्न:

1. लोक कला किसका प्रतीक है?

   उत्तर: यह किसी समुदाय की सामूहिक रचनात्मकता, कल्पना और आस्था की अभिव्यक्ति है।

2. लोक कला के कितने प्रकार होते हैं?

   उत्तर: धार्मिक, उपयोगी और व्यक्तिगत।

3. भारतीय लोक कलाओं के नाम लिखिए।

   उत्तर: कलमकारी, मधुबनी, फुलकारी, कोलम, कंथा कढ़ाई आदि।

4. कोलम किस क्षेत्र की लोक कला है?

   उत्तर: दक्षिण भारत।

5. कोलम किसका प्रतीक मानी जाती है?

   उत्तर: शुभता और समृद्धि का।

6. भारत में फर्श पर बनाई जाने वाली सजावट को क्या कहते हैं?

   उत्तर: रंगोली, अल्पना, कोलम, संझी आदि।

7. कोलम कला में कौन-कौन से सामग्री प्रयोग होती है?

   उत्तर: चावल का आटा, चमकीले रंग।

8. कोलम चित्र बनाने की विधि लिखिए।

   उत्तर:

   1. ज़मीन को गीला करना
   2. चावल के पेस्ट को अंगुलियों से छिड़ककर रेखाएँ बनाना

9. फुलकारी का अर्थ क्या है?

   उत्तर: फूलों का काम।

10. फुलकारी में कौन-कौन सी सामग्री प्रयोग होती है?

    उत्तर: कपड़ा, रेशमी धागा

11. इन कलाओं में प्रमुख रंग कौन सा है?

    उत्तर: सुनहरा

12. कंथा डिज़ाइन के स्रोत क्या हैं?

    उत्तर: ग्रामीण परिदृश्य, त्योहार, दैनिक जीवन की वस्तुएँ आदि

13. कंथा डिज़ाइन किन वस्तुओं पर बनाई जाती है?

    उत्तर: रजाई, विवाह चटाई, थैले, दर्पण और आभूषण लपेटने के कपड़े आदि

14. कंथा डिज़ाइन पर किस लोक कला का प्रभाव है?

    उत्तर: कालीघाट पटचित्र

15. कंथा साड़ी में कौन-कौन से रूपांकन होते हैं?

    उत्तर: मानव और पशु आकृतियाँ

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:

प्र.1: लोक कला क्या है? यह ग्रामीण समाज की कैसे सहायता करती है?

उत्तर:

- लोक कला किसी समुदाय की सामूहिक रचनात्मकता, कल्पना और आस्था की अभिव्यक्ति है।
- भारत में विभिन्न प्रकार की लोक कलाएँ पाई जाती हैं।
- हर गाँव की अपनी लोक कला होती है जैसे — कलमकारी, कोलम, मधुबनी, कालीघाट।
- यह कला पीढ़ी दर पीढ़ी चली आती है।
- यह ग्रामीण समाज को रोज़गार प्रदान करती है।
- उदाहरण: चित्रकला, मूर्तिकला, खिलौने, परिधान, बर्तन, फर्नीचर आदि।

प्र.2: किसी एक फर्श सज्जा की लोक कला का वर्णन कीजिए?

उत्तर:

- कोलम एक पारंपरिक दक्षिण भारतीय लोक कला है।
- यह शुभता और समृद्धि का प्रतीक मानी जाती है।
- पहले फर्श को साफ़ कर गीला किया जाता है।
- फिर चावल के पेस्ट से रेखाएँ बनाई जाती हैं।
- बिंदु बनाकर उन्हें जोड़कर आकृतियाँ बनाई जाती हैं।

प्र.3: फुलकारी लोक कला की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर:

- फुलकारी का अर्थ होता है "फूलों का काम।"
- यह शब्द पंजाब की महिलाओं द्वारा की जाने वाली एक विशेष कढ़ाई शैली के लिए प्रयोग होता है।
- फुलकारी में रेशमी धागों का प्रयोग किया जाता है।
- इसकी डिज़ाइन पारंपरिक ज्यामितीय आकृतियों पर आधारित होती है।
- ये आकृतियाँ लाल कपड़े पर सुनहरे पीले और चाँदी जैसे सफेद धागों से कढ़ी जाती हैं।
- पूरे डिज़ाइन में सुनहरा रंग प्रमुख होता है।

प्र.4: कंथा कढ़ाई पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर:

- बंगाल में कढ़ाई और रजाई बनाने की एक समृद्ध लोक परंपरा है जिसे कंथा कहा जाता है।
- कंथा पुरानी साड़ियों और धोती से बनाई जाती है।
- रजाई, विवाह चटाई, थैले, दर्पण और आभूषण लपेटने के कपड़े कंथा कढ़ाई से बनाए जाते हैं।
- कंथा में पशु और मानव आकृतियों को शैलीबद्ध रूप में दर्शाया जाता है।
- इसमें सफेद, हरा, बैंगनी, लाल, भूरा, पीला और काला रंग प्रयोग होता है।

प्र.5: कंथा साड़ी का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर:

- यह साड़ी पारंपरिक कंथा शैली और तकनीक से कढ़ी गई है।
- इसमें पशु और मानव आकृतियों को शैलीबद्ध रूप में दर्शाया गया है।
- साड़ी का आधार रंग गुलाबी है और इसमें चेन स्टिच का प्रयोग हुआ है।
- इसमें सफेद, हरा, बैंगनी, लाल, भूरा, पीला, स्लेटी और काले रंग के धागों का प्रयोग किया गया है।
- एक राजा जैसी आकृति घोड़े पर छतरी लिए बैठे हुए दर्शाई गई है।
- डिज़ाइन में पक्षी और मधुमक्खियाँ भी शामिल हैं।
- इस पर कालीघाट पटचित्र का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1: कोलम किस क्षेत्र की लोक कला है?

1. महाराष्ट्र b) पश्चिम बंगाल c) दक्षिण भारत d) केरल
   उत्तर: **c) दक्षिण भारत**

प्र.2: कोलम चित्रकला कहाँ की जाती है?

1. दीवार पर b) टाइल्स पर c) फर्श पर d) संगमरमर पर
   उत्तर: **c) फर्श पर**

प्र.3: फुलकारी में किस प्रकार के धागे का प्रयोग होता है?

1. रेशम b) जूट c) ऊन d) नायलॉन
   उत्तर: **a) रेशम**

प्र.4: फुलकारी किस राज्य की लोक कला है?

1. दक्षिण भारत b) गुजरात c) पंजाब d) राजस्थान
   उत्तर: **c) पंजाब**

प्र.5: कंथा कढ़ाई में इनमें से कौन सा रंग प्रयोग नहीं होता?

1. सफेद b) हरा c) सुनहरा d) लाल

   उत्तर: **c) सुनहरा**

प्र.6: सूचीबद्ध कंथा क्या है?

1. कपड़े का प्रकार b) साड़ी का प्रकार c) कढ़ाई d) रजाई का प्रकार

   उत्तर: **c) कढ़ाई**

सत्य / असत्य

i) बंगाल में कढ़ाई और रजाई बनाने की समृद्ध लोक परंपरा है जिसे कंथा कहा जाता है।

उत्तर: **सत्य**

ii) कंथा में सफेद, हरा, बैंगनी, लाल, भूरा आदि रंगों का प्रयोग होता है।

उत्तर: **सत्य**

मिलान कीजिए

क्रमांक	**कला शैली**
1.	कोलम → पंजाब
2.	कालीघाट → बिहार
3.	फुलकारी → दक्षिण भारत(तमिलनाडु)
4.	कंथा कढ़ाई → महाराष्ट्र
5.	मधुबनी → कोलकाता
6.	वारली → बंगाल

उत्तर:

1. दक्षिण भारत (तमिलनाडु)
2. कोलकाता
3. पंजाब
4. बंगाल
5. बिहार
6. महाराष्ट्र

पाठ–5

पुनर्जागरण (नवजागरण)

संक्षिप्त परिचय

- पुनर्जागरण एक शब्द है जिसका अर्थ है 'पुनर्जन्म'।
- यह शब्द प्राचीन यूनानी और रोमन संस्कृति में रुचि के पुनरुत्थान से जुड़ा है।
- यूरोप में 14वीं से 17वीं शताब्दी के बीच एक सांस्कृतिक, कलात्मक और बौद्धिक आंदोलन था, जिसका अर्थ है "फिर से जागना" या "पुनर्जन्म"।
- इसकी शुरुआत 14वीं शताब्दी में इटली में हुई और 15वीं और 16वीं शताब्दी में यह पूरे यूरोप में फैल गया।
- इस युग को नई खोजों, नए प्रयोगों, नई सोच की शक्ति और नए नियमों का युग कहता है।
- इस काल को तीन भागों में बाँटा गया है — प्रारंभिक पुनर्जागरण, उच्च्य पुनर्जागरण और **अति पुनर्जागरण**
- इस युग की कला में मानव शरीर रचना को बेहतर रूप में दर्शाने पर ज़ोर दिया गया।
- कला की रचना और प्रकाश-छाया का नाटकीय मिश्रण इस युग की विशेषता है।
- इस युग के प्रमुख कलाकारों में मसाचियो, बोटिचेली, लियोनार्डो दा विंची, राफेल, माइकल एंजेलो, रेम्ब्रांट और रूबेंस शामिल हैं।

5.1 वीनस का जन्म

कलाकार: **सैंड्रो बोटिचेली**

माध्यम: **कैनवास पर टेम्परा**

- यह चित्र प्राचीन यूनानी देवी वीनस को दर्शाता है, जो एक शंख पर जल से बाहर आती हुई दिखाई गई हैं।
- वह एक पूर्ण विकसित स्त्री के रूप में प्रकट होती हैं।
- ऋतुओं की एक देवी उन्हें फूलों से सजी हुई वस्त्र प्रदान करती है।
- दूसरी ओर हवा के देवता जैसे देवदूत उड़ते हुए दिखाई देते हैं।
- वीनस की गर्दन लंबी है और उसका बायाँ कंधा असामान्य ढंग से झुका हुआ है।
- उसकी भुजाएँ पतली और लंबी हैं।

5.2 मोनालिसा

कलाकार: **लियोनार्डो दा विंची**

माध्यम: **पॉपलर लकड़ी पर तेल रंग**

- यह प्रसिद्ध चित्र लियोनार्डो दा विंची द्वारा बनाया गया था।
- वे एक इतालवी चित्रकार थे, जिन्हें वैज्ञानिक और कलाकार दोनों रूपों में माना जाता है।

- यह चित्र 16वीं शताब्दी में पॉपलर लकड़ी पर तेल रंगों से बनाया गया।
- यह चित्र लूव्र संग्रहालय, पेरिस में रखा गया है।
- मोना लिसा के चेहरे पर एक रहस्यमयी मुस्कान है, जो दर्शक का स्वागत करती प्रतीत होती है।
- चित्र में चेहरे पर कोई बाल नहीं दिखाए गए हैं — यहाँ तक कि भौंहें और पलकों का भी अभाव है।
- चित्र के पीछे एक विस्तृत प्राकृतिक दृश्य है।

5.3 पिएता

कलाकार: **माइकल एंजेलो**

माध्यम: **संगमरमर की मूर्ति**

- पिएता मूर्ति एक ही संगमरमर की शिला से बनाई गई है।
- इसमें वर्जिन मैरी को मृत ईसा मसीह को अपनी गोद में पकड़े हुए दिखाया गया है।
- माँ बैठी हुई है और ईसा मसीह मृत अवस्था में उसकी गोद में विश्राम कर रहे हैं।
- यह मूर्ति माइकल एंजेलो द्वारा बनाई गई थी।
- मैडोना को ईसा से कम उम्र में दर्शाया गया है, जिससे उसकी पवित्रता का प्रतीक मिलता है।
- वस्त्रों की बहाव भरी आकृति और शरीर रचना की सटीकता इस मूर्ति की विशेषताएँ हैं।

5.4 द नाइट वॉच

कलाकार: **रेम्ब्रांट**

माध्यम: **कैनवास पर तेल रंग**

- रेम्ब्रांट ने यह चित्र **1640–1642** के बीच बनाया।
- इसमें एक युवा कप्तान को उसके सहायक और पीले वस्त्रों में एक छोटी लड़की के साथ दिखाया गया है।
- लड़की की कमर से एक सफेद मृत मुर्गा लटका हुआ है, जो पराजित शत्रु का प्रतीक है।
- पृष्ठभूमि में एक ड्रमर खड़ा है जो मार्च को ऊर्जा देता है।
- चित्र में प्रकाश और छाया का सुंदर प्रयोग किया गया है।
- कप्तान काले वस्त्रों में है और उसके शरीर पर लाल पट्टा है।
- यह एक पारंपरिक सैन्य चित्र है जिसमें भावनात्मक अभिव्यक्ति भी है।

लघु उत्तरीय प्रश्न:

· प्र.1: ‘द नाइट वॉच’ चित्रकला में कौन सा माध्यम प्रयोग हुआ है?

उत्तर: कैनवास पर तेल रंग।

- प्र.2: रेम्ब्रांट की चित्रकला की विशेषता क्या है?

  उत्तर: प्रकाश और छाया के रहस्यमय प्रयोग।
- प्र.3: 'द नाइट वॉच' चित्र की एक मुख्य विशेषता क्या है?

  उत्तर: यह रात्रि दृश्य नहीं बल्कि दिन का दृश्य है।
- प्र.4: यह चित्र क्या दर्शाता है?

  उत्तर: एक युवा कप्तान अपने सहायक को टुकड़ी को मार्च करने का आदेश देता है।
- प्र.5: 'द बर्थ ऑफ वीनस' चित्र के कलाकार का नाम क्या है?

  उत्तर: सैंड्रो बोटिचेली।
- प्र.6: इस चित्र में वीनस किसका प्रतीक है?

  उत्तर: सौंदर्य और सत्य का।
- प्र.7: वीनस की शारीरिक रचना की प्रकृति क्या है?

  उत्तर: वीनस को लंबी गर्दन के साथ दर्शाया गया है।
- प्र.8: 'मोना लिसा' चित्र का माध्यम क्या है?

  उत्तर: पॉपलर लकड़ी पर तेल रंगों से चित्रित।
- प्र.9: विंची ने किन-किन क्षेत्रों में योगदान दिया?

  उत्तर: चित्रकार और वैज्ञानिक।
- प्र.10: इस चित्र की पृष्ठभूमि क्या है?

  उत्तर: पर्वत, घाटी और नदी वाला प्राकृतिक दृश्य।
- प्र.11: 'पिएटा' मूर्ति का विषय क्या है?

  उत्तर: वर्जिन मैरी द्वारा मृत ईसा मसीह को गोद में पकड़े हुए।
- प्र.12: 'पिएटा' मूर्ति में कितनी आकृतियाँ हैं? उनके नाम बताइए।

  उत्तर: दो — मैरी और ईसा।
- प्र.13: 'पिएटा' मूर्ति की मूल संरचना क्या है?

  उत्तर: पिरामिडीय।
- प्र.14: माइकल एंजेलो की प्रसिद्ध कृतियाँ कौन-कौन सी हैं?

  उत्तर: डेविड, मोसेस, सिस्टीन चैपल की छत पर भित्तिचित्र।
- प्र.15: पुनर्जागरण का अर्थ क्या है?

  उत्तर: पुनर्जन्म।
- **प्र.16:** पुनर्जागरण काल को कितने भागों में बाँटा गया है?

  उत्तर: तीन भाग — प्रारंभिक पुनर्जागरण, उच्च पुनर्जागरण और अति पुनर्जागरण
- प्र.17: पुनर्जागरण काल की विशेषताएँ क्या हैं?

  उत्तर: कला की रचना और प्रकाश-छाया का नाटकीय मिश्रण।

- प्र.18: पुनर्जागरण काल के कलाकारों के नाम बताइए।

  उत्तर: बोटिचेली, लियोनार्डो दा विंची।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्र.1: पुनर्जागरण शब्द का क्या अर्थ है? इस काल की मुख्य विशेषताओं को समझाइए।

उत्तर:

- पुनर्जागरण एक शब्द है जिसका अर्थ है "पुनर्जन्म"।
- यह शब्द प्राचीन यूनानी और रोमन संस्कृति में रुचि के पुनरुत्थान से जुड़ा है।
- यह काल नए प्रयोगों, तर्कशक्ति, नियमों और खोजों के लिए जाना जाता है।
- इसलिए इसे "प्रबोधन युग" कहा गया।
- इस युग की कला में मानव शरीर रचना को बेहतर रूप में दर्शाने पर ज़ोर दिया गया।
- कला की रचना और प्रकाश-छाया का नाटकीय मिश्रण इस युग की विशेषताएँ हैं।

प्र.2: वीनस किसका प्रतीक है? चित्र ‘बर्थ ऑफ वीनस’ में वीनस को कैसे दर्शाया गया है?

उत्तर:

- वीनस सौंदर्य और सत्य की प्रतीक है।
- सैंड्रो बोटिचेली ने ‘बर्थ ऑफ वीनस’ चित्र बनाया।
- इस चित्र में प्राचीन यूनानी देवी वीनस को शंख पर जल से बाहर आते हुए दर्शाया गया है।
- वीनस को नग्न रूप में दर्शाया गया है।
- ऋतुओं की एक देवी उसे फूलों से सजे वस्त्र प्रदान करती है।
- दूसरी ओर हवा के देवता जैसे देवदूत उड़ते हुए दिखाई देते हैं।
- वीनस को केंद्र में एक विनम्र मुद्रा में खड़ा दिखाया गया है।
- उसकी गर्दन लंबी है और बायाँ कंधा असामान्य ढंग से झुका हुआ है। उसकी भुजाएँ पतली और लंबी हैं।

प्र.3: ‘मोना लिसा’ चित्र का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

- ‘मोना लिसा’ चित्र प्रसिद्ध चित्रकार लियोनार्डो दा विंची द्वारा बनाया गया था।
- यह चित्र 16वीं शताब्दी में पॉपलर लकड़ी पर तेल रंगों से बनाया गया।
- यह चित्र पेरिस के लूव्र संग्रहालय में रखा गया है।
- मोना लिसा के चेहरे पर एक रहस्यमयी मुस्कान है जो दर्शक का स्वागत करती प्रतीत होती है।
- चित्र में चेहरे पर कोई बाल नहीं दिखाए गए हैं — यहाँ तक कि भौंहें और पलकों का भी अभाव है।

प्र.4: क्या आप माइकल एंजेलो को पुनर्जागरण का महान कलाकार मानते हैं? उत्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

- 'पिएता' एक मूर्ति है जिसे माइकल एंजेलो ने 1498–1499 ई. में बनाया था।
- यह एक ही संगमरमर की शिला से बनाई गई है।
- इस प्रसिद्ध कृति में वर्जिन मैरी को मृत ईसा मसीह को अपनी गोद में पकड़े हुए दर्शाया गया है।
- माँ बैठी हुई है और ईसा मसीह मृत अवस्था में उसकी गोद में विश्राम कर रहे हैं।
- इस मूर्ति की संरचना पिरामिडीय आकार की है।

प्र.5: 'नाइट वॉच' चित्र का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

- यह चित्र रेम्ब्रांट की प्रसिद्ध कृतियों में से एक है, जिसमें एक युवा कप्तान अपने सहायक को नागरिकों की टुकड़ी को मार्च करने का आदेश देता है।
- चित्र में प्रकाश और छाया का प्रभावशाली प्रयोग किया गया है।
- कप्तान काले वस्त्रों में है और उसके शरीर पर लाल पट्टा है।
- सहायक और एक छोटी लड़की पीले वस्त्रों में दिखाई गई हैं।
- लड़की की कमर से एक सफेद मृत मुर्गा लटका हुआ है, जो पराजित शत्रु का प्रतीक है।
- पृष्ठभूमि में एक ड्रमर खड़ा है जो मार्च को ऊर्जा देता है।

प्र.6: रेम्ब्रांट पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर:

- रेम्ब्रांट एक डच चित्रकार और यथार्थवादी कलाकार थे।
- उनकी चित्रकला प्रकाश और छाया के रहस्यों को उजागर करती है।
- प्रकाश और छाया चित्र की आत्मा को उजागर करते हैं।
- उन्होंने 'नाइट वॉच' चित्र 1640–1642 के बीच बनाया।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1: 'बर्थ ऑफ वीनस' चित्र के कलाकार का नाम क्या है?

1. माइकल एंजेलो b) सैंड्रो बोटिचेली c) लियोनार्डो दा विंची d) राफेल

   उत्तर: b) सैंड्रो बोटिचेली

प्र.2: वीनस को किससे जन्म लेते हुए दर्शाया गया है?

1. शंख से b) वृक्ष से c) अंडे से d) गर्भ से

   उत्तर: a) शंख से

प्र.3: 'मोनालिसा' चित्र किसने बनाया?

1. सैंड्रो बोटिचेली b) माइकल एंजेलो c) लियोनार्डो दा विंची d) रेम्ब्रांट

   उत्तर: c) लियोनार्डो दा विंची

प्र.4: 'मोनालिसा' चित्र किस काल से संबंधित है?

1. पुनर्जागरण b) इम्प्रेशनिज़्म c) क्यूबिज़्म d) सुर्रियलिज़्म

उत्तर: a) पुनर्जागरण

रिक्त स्थान भरिए

1. पुनर्जागरण एक शब्द है जिसका अर्थ है ______________________।
   उत्तर: **पुनर्जन्म**
2. पुनर्जागरण काल को ____________________ में बाँटा गया है।
   उत्तर: **तीन भागों में**

सही मिलान चुनिए

क्रमांक	**कृति का नाम**	**कलाकार**
1)	पिएटा-	रेम्ब्रांट
2)	मोना लिसा-	लियोनार्डो दा विंची
3)	बर्थ ऑफ वीनस	- मोनेट
4)	द नाइट वॉच	- राफेल

सही उत्तर:

मोना लिसा → लियोनार्डो दा विंची

पाठ–6
प्रभाववाद

संक्षिप्त परिचय

- प्रभाववाद एक कला आंदोलन था जो रोज़मर्रा के जीवन की सरलता से प्रेरित था।
- इन कलाकारों ने वस्तुओं पर प्रकाश और चमक के प्रभाव को दर्शाया।
- प्रभाववादी विचारधारा के कलाकारों ने प्राकृतिक प्रकाश में चित्र बनाना शुरू किया ताकि वे जो देख रहे थे या महसूस कर रहे थे, उसे अभिव्यक्त कर सकें।
- उन्होंने खुले में रंग और प्रकाश के प्रभाव को पकड़ने की कोशिश की।
- उन्होंने नदियाँ, तालाब, बंदरगाह, नगर दृश्य और मानव आकृतियाँ जैसे विषयों को चित्रित किया।
- प्रमुख कलाकार थे: क्लॉड मोने, एडुआर्ड मोने, ऑगस्ट रेनॉयर, एडगर डेगा

उत्तर-प्रभाववाद – परिचय

- उत्तर प्रभाववादी चित्रकारों ने प्रभाववाद के बाद कार्य किया और आंतरिक भावनाओं को अधिक महत्व दिया।
- उन्होंने आंतरिक भावनाओं को व्यक्त करने के लिए ज्यामितीय और विकृत रूपों पर ज़ोर दिया।
- **जॉर्जेस सेरात** ने बिंदु चित्रण तकनीक विकसित की जिसमें रंग के छोटे-छोटे बिंदुओं का व्यवस्थित प्रयोग होता है।
- **पॉल सेज़ान** ने चित्रों में आयतन और संरचना को प्रस्तुत किया।
- **गॉगैं** और **विन्सेंट वैन गॉग** ने जीवंत और घूमते हुए ब्रश स्ट्रोक्स का प्रयोग किया।

प्रमुख कलाकृतियाँ

6.1 वॉटर लिलीज़

कलाकार: **क्लॉड मोने**

माध्यम: **तेल रंग**

- क्लॉड मोने का जन्म 14 नवंबर 1840 को पेरिस में हुआ था।
- उन्होंने 'वॉटर लिलीज़' नामक चित्रों की एक श्रृंखला बनाई।
- एक चित्र में तालाब के किनारे एक सुंदर जापानी पुल का दृश्य दर्शाया गया है।
- उन्होंने इसकी चमकदार छाया को कई जीवंत रंगों में स्वतंत्र रूप से चित्रित किया।
- विभिन्न आकारों की खिले हुए जलकुम्भी चित्र की सुंदरता को बढ़ाते हैं।

6.2 मोलिन डे ला गैलेत

कलाकार: **ऑगस्ट रेनॉयर**

माध्यम: **कैनवास पर तेल रंग**

- यह चित्र 1876 में बनाया गया था।
- इसमें युवा लोग जीवन का आनंद लेते हुए — पिकनिक, नृत्य और पार्टी करते हुए दिखाए गए हैं।
- रेनॉयर ने बैंगनी, सफेद और नीले रंगों की छायाओं का प्रयोग किया।
- वे फ्रांसीसी कलाकार और इंप्रेशनिस्ट चित्रकार थे।
- उन्होंने कोमल, भावुक और आकर्षक चित्र बनाए।
- उन्होंने गति और वातावरण को देखा और चित्रित किया।
- उनके चित्रों में संतुलन, सौहार्द और कोमलता होती है।

6.3 डांस क्लास

कलाकार: एडगर डेगा

माध्यम: कैनवास पर तेल रंग

- यह चित्र 1874 में डेगा द्वारा बनाया गया था।
- इसमें लड़कियाँ (बैले नर्तकियाँ) नृत्य के लिए तैयार होती दिखाई गई हैं।
- अन्य लड़कियाँ नृत्य कक्ष में घूमती और नृत्य करती दिखती हैं।
- लड़कियाँ पूरी स्कर्ट पहनकर अभ्यास कर रही हैं।
- मुद्राएँ जीवंत हैं।
- चित्र में सूर्य के बजाय रंगमंच की कृत्रिम रोशनी को दर्शाया गया है।

6.4 स्टिल लाइफ विद अनियन्स

कलाकार: **पॉल सेज़ान**

माध्यम: **कैनवास पर तेल रंग**

- इस चित्र में कलाकार ने वस्तु की रोशनी और छाया को एक ही रंग के विभिन्न टोन में दर्शाया है।
- लाल और पीले रंगों के प्रयोग से प्रकाश की कंपन को दर्शाया गया है।
- नीले और सफेद कपड़े की पर्याप्त मात्रा से हवा और स्थान की अनुभूति होती है।

6.5 स्टारी नाइट

कलाकार: **विन्सेंट वैन गॉग**

माध्यम: **तेल रंग**

- विन्सेंट वैन गॉग एक डच चित्रकार थे।
- उन्होंने रंगों को बहुत महत्व दिया।

- ‘स्टारी नाइट’ चित्र में तारों से भरा रात्रि आकाश दर्शाया गया है।
- चित्र में घूमते बादल, चमकते तारे और उज्ज्वल चाँद जैसे तत्व हैं।
- पहाड़ियों के नीचे एक छोटा शहर दर्शाया गया है।
- एक विशाल अंधकारमय आकृति एक अकेले साइप्रस वृक्ष की चोटी को दर्शाती है।
- उनकी अन्य प्रसिद्ध चित्रकृतियाँ हैं: **सनफ्लावर, पोटैटो ईटर** आदि।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्र.1: मोने की शैली क्या है?

उत्तर: प्रभाववाद

प्र.2: ‘वॉटर लिलीज़’ चित्र किसने बनाया?

उत्तर: क्लॉड मोने

प्र.3: ‘मोलिन डे ला गैलेत’ चित्र के कलाकार का नाम क्या है?

उत्तर: ऑगस्ट रेनॉयर

प्र.4: ‘मोलिन डे ला गैलेत’ चित्र की शैली क्या है?

उत्तर: प्रभाववाद

प्र.5: डिगा द्वारा प्रयोग किया गया मुख्य माध्यम क्या था?

उत्तर: पेस्टल रंग

प्र.6: ‘डांस क्लास’ चित्र के कलाकार कौन हैं?

उत्तर: एडगर डेगा

प्र.7: ‘स्टिल लाइफ विद अनियन्स’ चित्र के कलाकार का नाम क्या है?

उत्तर: पॉल सेज़ान

प्र.8: इस चित्र में क्या प्रभाव दर्शाया गया है?

उत्तर: हवा और स्थान की अनुभूति

प्र.9: सेज़ान को ‘घनवाद का जनक’ क्यों माना जाता है?

उत्तर: उनकी शैली ने 19वीं शताब्दी के अंत के प्रभाववाद और 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक घनवाद के बीच सेतु का कार्य किया।

प्र.10: वैन गॉग किस देश से संबंधित थे?

उत्तर: हॉलैंड (ज़ुंडर्ट, नीदरलैंड)

प्र.11: वैन गॉग की कुछ प्रसिद्ध चित्रकृतियाँ बताइए।

उत्तर: सनफ्लावर, पोटैटो ईटर, व्हीट फील्ड

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्र.1: 'मोलिन दे ला गैलेत' चित्र पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर:

- 'मोलिन दे ला गैलेत' चित्र 1876 में ऑगस्ट रेनॉयर द्वारा कैनवास पर तेल रंगों से बनाया गया था।
- इस चित्र में युवा लोग जीवन का आनंद लेते हुए — पिकनिक, नृत्य और पार्टी करते हुए दिखाए गए हैं।
- इसमें बैंगनी, सफेद और नीले रंगों की छायाओं का प्रयोग किया गया है।
- रेनॉयर एक फ्रांसीसी कलाकार प्रभाववादी चित्रकार थे।
- उन्होंने कोमल, भावनात्मक और आकर्षक चित्र बनाए।
- उन्होंने गति और वातावरण को देखा और चित्रित किया।
- उनके चित्र संतुलन, सौहार्द और कोमलता से भरपूर होते थे।

प्र.2: 'वॉटर लिलीज़' चित्र का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

- यह चित्र क्लॉड मोने द्वारा बनाया गया था।
- इस चित्र में तालाब के किनारे एक सुंदर जापानी पुल का दृश्य दर्शाया गया है।
- उन्होंने इसकी चमकदार छाया को कई जीवंत रंगों में स्वतंत्र रूप से चित्रित किया जिससे गहराई उत्पन्न होती है।
- विभिन्न आकारों की खिले हुए जलकुम्भी चित्र की सुंदरता को और बढ़ाते हैं।

प्र.3: 'डांस क्लास' चित्र का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर:

- 'डांस क्लास' चित्र 1874 में डेगा द्वारा बनाया गया था।
- इस चित्र में लड़कियाँ (बैले नर्तकियाँ) नृत्य के लिए तैयार होती दिखाई गई हैं, जबकि अन्य नृत्य कक्ष में घूमती और नृत्य करती हैं।
- लड़कियाँ पूरी स्कर्ट पहनकर अभ्यास कर रही हैं।
- मुद्राएँ जीवंत हैं।
- चित्र में सूर्य के बजाय रंगमंच की कृत्रिम रोशनी को दर्शाया गया है।

प्र.4: 'स्टारी नाइट' चित्र का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर:

- 'स्टारी नाइट' चित्र विन्सेंट वैन गॉग द्वारा तेल रंगों से बनाया गया था।
- इस चित्र में तारों से भरा रात्रि आकाश दर्शाया गया है।
- चित्र में घूमते बादल, चमकते तारे और उज्ज्वल चाँद जैसे तत्व हैं।
- यह चित्र एक घूमती आकाशगंगा जैसा प्रतीत होता है।

- एक विशाल अंधकारमय आकृति एक अकेले साइप्रस वृक्ष की चोटी को दर्शाती है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्र.1: 'स्टारी नाइट' चित्र के कलाकार का नाम क्या है?

1. विन्सेंट वैन गॉग b) लियोनार्डो दा विंची c) राफेल d) माइकल एंजेलो

   उत्तर: **a) विन्सेंट वैन गॉग**

प्र.2: 'स्टारी नाइट' चित्र में क्या दर्शाया गया है?

1. चाँद b) पेड़-पौधे c) तारे भरा आकाश d) प्राकृतिक दृश्य

   उत्तर: **c) तारे भरा आकाश**

सत्य / असत्य

i) प्रभाववाद एक कला आंदोलन था जो रोज़मर्रा के जीवन की सरलता से प्रेरित था।

उत्तर: **सत्य**

ii) उत्तर–प्रभाववाद चित्रकारों ने प्रभाववाद के बाद कार्य किया और आंतरिक भावनाओं को अधिक महत्व दिया।

उत्तर: **सत्य**

कलाकार और उनकी कलाकृतियाँ

1. वॉटर लिलीज़ → क्लॉड मोने
2. मोलिन दे ला गैलेत → ऑगस्ट रेनॉयर
3. डांस क्लास → एडगर डेगा
4. स्टिल लाइफ विद अनियन्स → पॉल सेज़ान
5. स्टारी नाइट → विन्सेंट वैन गॉग

सही मिलान चुनिए

1. वॉटर लिलीज़ → पॉल सेज़ान
2. स्टारी नाइट → विन्सेंट वैन गॉग
3. डांस क्लास → मोने
4. स्टिल लाइफ विद अनियन्स → रेनॉयर

सही उत्तर:

स्टारी नाइट → विन्सेंट वैन गॉग

पाठ–7
घनवाद, अतियथार्थवाद और अमूर्त कला

घनवादः संक्षिप्त परिचय

- घनवाद एक चित्रकला और मूर्तिकला की शैली है जिसकी शुरुआत 1907 के आसपास पेरिस में हुई।
- पॉल सेज़ान को घनवाद का अग्रदूत माना जाता है।
- उनका मानना था कि प्रकृति की हर वस्तु को बेलन, गोला या शंकु के रूप में समझा और चित्रित किया जाना चाहिए।
- इस काल के प्रमुख कलाकारों में **पिकासो, ब्राक और लेज़र** शामिल हैं, जिन्हें घनवाद का संस्थापक माना जाता है।
- सेज़ान ने विशेष रूप से स्थिर जीवन की वस्तुएँ, प्राकृतिक दृश्य और मानव आकृतियों को अपने चित्रों का विषय बनाया।
- उनका मुख्य ध्यान रूप पर था — वे ज्यामितीय आकृतियों के माध्यम से गहराई नहीं बल्कि रंगों की गहराई को दर्शाते थे।
- 1920 तक यह कला आंदोलन अपने चरम पर पहुँच गया था।

7.1 मैन विद वायलिन (1912)

शीर्षक: **मैन विद वायलिन**

माध्यम: **कैनवास पर तेल रंग**

कलाकार: **पाब्लो पिकासो**

काल: **घनवाद**

- यह चित्र 1912 में बनाया गया और विश्लेषणात्मक अध्ययन का उत्कृष्ट उदाहरण है।
- वायलिन पकड़े हुए व्यक्ति को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।
- मानव आकृति को ज्यामितीय आकारों में बदलकर टुकड़ों में जोड़ा गया है।
- चित्र में भूरे और हरे रंगों की छायाओं का मिश्रण अद्भुत है।

पाब्लो पिकासो: कलाकार परिचय

- जन्म: 1881, मलागा, स्पेन
- पाब्लो पिकासो चित्रकार, मूर्तिकार और शिल्पकार थे।
- पेरिस में उन्होंने दो शैलियाँ शुरू की — **नीला काल** और **गुलाबी काल**

- नीले काल में उन्होंने नीले और हरे रंगों का प्रयोग किया।
- गुलाबी काल में उन्होंने गुलाबी रंगों का प्रयोग किया।
- वे अफ्रीकी कला से प्रभावित थे।
- उनकी प्रसिद्ध कृति **गुएर्निका** है, जो स्पेनिश गृह युद्ध पर आधारित है।

अतियथार्थवाद: संक्षिप्त परिचय

- अतियथार्थवाद एक अन्य कला आंदोलन था जिसकी शुरुआत 1924 में हुई और यह 1955 तक चला।
- इस शैली के कलाकारों ने अपने अवचेतन मन की कल्पनाओं को चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया।
- **साल्वाडोर डाली** और **जियोर्जियो डी चिरिको** इस आंदोलन के प्रसिद्ध कलाकार थे।

7.2 **पर्सिस्टेंस ऑफ मेमोरी** (1931)

शीर्षक: **पर्सिस्टेंस ऑफ मेमोरी**

माध्यम: **कैनवास पर तेल रंग**

कलाकार: **साल्वाडोर डाली**

काल: **अतियथार्थवाद**

- इस चित्र में विभिन्न वस्तुएँ एक चट्टानी समुद्र तट पर दर्शाई गई हैं।
- यह चित्र वृक्षहीन भूमि और शांति का प्राकृतिक दृश्य प्रस्तुत करता है, जहाँ युद्ध के कारण उत्पन्न खालीपन है।
- इसमें मानव मूल्यों के विनाश को दर्शाया गया है।
- पिघलती हुई घड़ियाँ यथार्थ प्रतीत होती हैं और मानव आत्मा की बेचैनी को दर्शाती हैं।
- विषयवस्तु डाली के सपनों या दुःस्वप्न से ली गई है।
- घड़ी की सतह पर रेंगती हुई चींटियाँ आभूषण की तरह दिखाई देती हैं।

साल्वाडोर डाली: कलाकार परिचय

- वे अतियथार्थवाद युग के सबसे प्रसिद्ध कलाकार थे।
- वे स्पेनिश चित्रकार, लेखक और फिल्म निर्माता भी थे।
- उन्होंने अपनी चित्रों में अजीब, विचित्र विषयों को प्रस्तुत किया।
- वे विषयों और वस्तुओं को चित्रित करते थे।

अमूर्त कला: संक्षिप्त परिचय

- अमूर्त कला की शुरुआत 1920 में हुई।
- इस शैली में कलाकार समकालीन दुनिया को यथार्थ रूप में चित्रित करने के लिए तैयार नहीं थे।
- कोई भी कला या चित्र जो वास्तविकता को नहीं दर्शाता, उसे अमूर्त कला कहा जाता है।
- कलाकारों ने अमूर्त विचारों को चित्रों के रूप में प्रस्तुत किया।

- **कैंडिंस्की, डेलोने और मॉन्ड्रियन** अमूर्त कला के अग्रणी कलाकार थे।

7.3 ब्लैक लाइन्स (1913)

शीर्षक: **ब्लैक लाइन्स**

माध्यम: **कैनवास पर तेल रंग**

कलाकार: **वासिली कैंडिंस्की**

काल: **अमूर्त कला**

- यह चित्र 1913 में वासिली कैंडिंस्की द्वारा बनाया गया था।
- उन्होंने रचना को काले रेखाओं, रंगीन पैच और ब्रश स्ट्रोक्स के माध्यम से व्यवस्थित किया।
- उन्होंने काले रंग का प्रयोग किया, जो भारतीय स्याही जैसा प्रतीत होता है।
- रेखाओं को विभिन्न अर्थों को दर्शाने के लिए व्यवस्थित किया गया।
- चित्र में सरलता और आरेखीय शैली दिखाई देती है।
- रेखाएँ, आकृतियाँ और रंग — सभी का अपना अर्थ और कार्य है।

वासिली कैंडिंस्की: कलाकार परिचय

- जन्म: 1866, रूस
- मृत्यु: 1944
- उन्हें अमूर्त कला के संस्थापक कलाकारों में माना जाता है।
- वे प्रसिद्ध चित्रकार और कला सिद्धांतकार थे।
- उन्होंने गैर-प्रतिनिधित्वात्मक कला की नींव रखी।
- उनका कार्य अमूर्तता और ज्यामितीय रूपों का संयोजन था।
- उनकी प्रमुख श्रृंखलाएँ थीं:
  - प्रभाववाद
  - काम चलाऊ प्रबंधन
  - संयोजन कला
- उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं:
  - अकंपनीड कंट्रास्ट
  - येल्लो अकम्प्नीमन्ट
  - अंगुलार स्ट्रक्चर

लघु उत्तर प्रकार प्रश्न

प्र1.घनवाद का अग्रदूत कौन था?

उत्तर: सेज़ान

प्र2. इस युग की शैली को विकसित करने का श्रेय किस कलाकार को जाता है?

उत्तर: पाब्लो पिकासो

प्र3. अतियथार्थवाद आंदोलन किस वर्ष शुरू हुआ?

उत्तर: 1924

प्र4. इस युग के एक प्रसिद्ध कलाकार का नाम बताइए।

उत्तर: साल्वाडोर डाली

प्र5. अमूर्त कला शैली किस वर्ष शुरू हुई?

उत्तर: 1910

प्र6. पिकासो की प्रसिद्ध काल कौन-कौन सी हैं?

उत्तर: ब्लू और पिंक पीरियड

प्र7. पिकासो को प्रसिद्धि किस शैली से मिली?

उत्तर: घनवाद

प्र8. पिकासो ने 'गुएर्निका' चित्र किस विषय पर बनाया?

उत्तर: स्पेनिश गृह युद्ध

प्र9. स्पेनिश गृह युद्ध पर आधारित पिकासो की सर्वश्रेष्ठ चित्रकृति कौन सी है?

उत्तर: गुएर्निका

प्र10. साल्वाडोर डाली की शैली क्या थी?

उत्तर: अतियथार्थवाद

प्र11. 'पर्सिस्टेंस ऑफ मेमोरी' नामक चित्र में आप क्या देखते हैं?

उत्तर: पिघलती घड़ियाँ और युद्ध के बाद की शांति

प्र12. वासिली कैंडिंस्की की तीन प्रमुख श्रृंखलाओं के नाम बताइए।

उत्तर: प्रभाववाद , काम चलाऊ प्रबंधन, संयोजन कला

प्र13. वासिली कैंडिंस्की ने अपनी कला में कौन सा माध्यम प्रयोग किया?

उत्तर: कैनवास पर तेल रंग

प्र14. वासिली कैंडिंस्की की एक प्रसिद्ध कृति का नाम बताइए।

उत्तर: ब्लैक लाइन्स

दीर्घ उत्तर प्रकार प्रश्न

प्र1. घनवाद पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर:

- घनवाद चित्रकला और मूर्तिकला की एक शैली है जो लगभग 1907 में पेरिस में शुरू हुई।
- सेज़ान इस शैली के अग्रदूत थे।
- उन्होंने कहा कि प्रकृति की हर वस्तु को बेलन या गोले के रूप में देखा जाना चाहिए।
- उनका उद्देश्य रूप को महत्व देना था, न कि रंग की गहराई को।
- यह कला आंदोलन 1920 के दशक में समाप्त हो गया।

प्र2. 'अमूर्त कला' पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर:

- यह शैली 1910 में शुरू हुई।
- कलाकार समकालीन दुनिया को यथार्थ रूप में चित्रित करने को तैयार नहीं थे।
- कोई भी गैर-प्रतिनिधित्वात्मक कला अमूर्त कला कहलाती है।
- कलाकारों ने अमूर्त विचारों को चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया।
- कैंडिंस्की, डेलोने और मॉन्ड्रियन अमूर्त कलाकार थे।

प्र3. 'पाब्लो पिकासो' पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर:

- पाब्लो पिकासो का जन्म 1881 में स्पेन के मलागा शहर में हुआ।
- वे चित्रकार और कलाकार दोनों थे।
- वे प्रतीकवाद से अत्यधिक प्रभावित थे।
- उन्होंने दो शैलियाँ विकसित कीं — ब्लू पीरियड और पिंक पीरियड।

- 1915 ई. से उन्होंने अमूर्त शैली विकसित की जिससे उन्हें विश्व प्रसिद्धि मिली।

प्र4. 'पर्सिस्टेंस ऑफ मेमोरी' चित्र का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

- यह साल्वाडोर डाली की प्रसिद्ध कृति है।
- यह कैनवास पर तेल रंगों से बनाई गई है।
- इसमें युद्ध के बाद की शांति को दर्शाया गया है।
- पिघलती घड़ियाँ युद्ध से फैली शून्यता का प्रतीक हैं।
- मानवीय मूल्यों के विनाश को दर्शाया गया है। समुद्र, आकाश और वीरान भूमि अकेलेपन को दर्शाते हैं।
- यह चित्र स्वप्न और यथार्थ का सुंदर मिश्रण है।
- यह अतियथार्थवाद को आकर्षक रूप में प्रस्तुत करता है।

प्र5. आधुनिक कला में कैंडिंस्की का मुख्य योगदान क्या था?

उत्तर:

- वासिली कैंडिंस्की का मुख्य योगदान अमूर्त चित्रकला था।
- वे अमूर्त चित्रकला के संस्थापक कलाकारों में से एक थे।
- वे चाहते थे कि चित्रकला संगीत की तरह अमूर्त और भावनात्मक हो।
- उन्होंने गैर-प्रतिनिधित्वात्मक कला की नींव रखी।

सही या गलत

1. 1920 तक क्यूबिज्म अपने चरम पर पहुँच चुका था। — **सही**
2. क्यूबिज्म का मुख्य उद्देश्य रूप को महत्व देना था। — **सही**
3. क्यूबिज्म की शुरुआत लंदन में हुई थी। — **गलत**
4. साल्वाडोर डाली सुर्रियलिज्म युग के प्रसिद्ध कलाकार थे। — **सही**
5. साल्वाडोर डाली की प्रसिद्ध कृति का नाम 'हंस दमयंती' था। — **गलत**

रिक्त स्थान भरिए

1. पिकासो का जन्म ____________ देश के ____________ शहर में हुआ था।
2. पिकासो ने पेरिस में ____________ काल अवधि शुरू कीं।

उत्तर:

1. **स्पेन, मालगा**
2. **ब्लू और पिंक**

पाठ-8
समकालीन भारतीय कला के पुरोगामी कलाकार

सामान्य विवरण

- 19वीं शताब्दी के अंत तक पारंपरिक भारतीय चित्रकला का प्रभाव कम होने लगा।
- यह वह समय था जब भारतीय कलाकारों ने अपनी पारंपरिक कला को सकारात्मक दृष्टिकोण से देखना शुरू किया और ब्रिटिश राज से पहले की यूरोपीय कला से आगे बढ़ने का प्रयास किया।
- आधुनिक भारतीय कला देश के इतिहास और सामाजिक परिस्थितियों से जुड़ी हुई है। कलाकारों ने उन्हीं परिस्थितियों में अपनी अलग शैली विकसित की।
- ब्रिटिश काल में कंपनी विचारधारा के तहत विभिन्न प्रकार की कलाकृतियाँ सामने आईं। भारतीय कलाकारों ने यूरोपीय तकनीकों का प्रयोग अपनी चित्रकला में किया।
- जामिनी रॉय, अमृता शेरगिल, गगनेन्द्रनाथ टैगोर ने भारतीय कला के इतिहास में अपनी अमिट छाप छोड़ी।
- इसके परिणामस्वरूप 20वीं शताब्दी के पहले भाग में 'बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट' का उदय हुआ।
- बंगाल स्कूल के कलाकारों ने भारतीय शास्त्रों, पौराणिक कथाओं और परंपराओं से प्रेरणा ली।
- अबनीन्द्रनाथ टैगोर, नंदलाल बोस, बिनोद बिहारी मुखर्जी आदि ने राष्ट्रीय आंदोलन को अपनी कला में स्थान दिया।

8.1 हंस दमयंती

शीर्षक: **हंस दमयंती**
माध्यम: **कैनवास पर तेल रंग**
तिथि: **1899**
कलाकार: **राजा रवि वर्मा**

- हंस दमयंती राजा रवि वर्मा की सबसे प्रसिद्ध कृतियों में से एक है।
- यह चित्र 1899 में तेल रंगों से बनाया गया था।
- दमयंती लाल साड़ी पहने हुए है और वह अपने प्रेमी नल का संदेश एक हंस के माध्यम से सुन रही है।
- हंस नल और उसके प्रेम की बात दमयंती को बताता है।
- दमयंती की आँखों की चमक और गालों की आभा से उसके मौन प्रेम की भावना व्यक्त होती है।
- उसका रूप कोमल, गरिमामय और सुंदर है जो उसे आकर्षक बनाता है।

राजा रवि वर्मा:

- राजा रवि वर्मा भारत के प्रसिद्ध कलाकारों में से एक थे।
- उनका जन्म केरल के किलिमनूर में हुआ था।
- वे उस समय के लोकप्रिय और विशिष्ट कलाकार थे जो भारतीय कला में यूरोपीय विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते थे।
- उन्होंने जल और तेल रंगों की तकनीक में ख्याति प्राप्त की।
- उनके चित्रों में भारतीय देवी-देवताओं की छवियाँ आज भी घरों और मंदिरों में देखी जा सकती हैं।
- हंस दमयंती उनकी प्रसिद्ध कृतियों में से एक है।
- उनके चित्र पोस्टर, प्रिंट और ओलियोग्राफ के रूप में आज भी लोकप्रिय हैं।

8.2 ब्रह्मचारीज

शीर्षक: **ब्रह्मचारीज**

माध्यम: **कैनवास पर तेल रंग**

तिथि: **1938**

कलाकार: **अमृता शेरगिल**

- अमृता शेरगिल ने ब्रह्मचारी**ज** चित्र 1938 में तेल रंगों से बनाया।
- यह चित्र दक्षिण भारत की पारंपरिक हिंदू मान्यताओं और रीति-रिवाजों की उनकी समझ का सुंदर उदाहरण है।
- इस चित्र में पाँच पुरुष आकृतियाँ दिखाई गई हैं।
- उन्होंने एक आश्रम में कुछ छात्रों को देखा और उन्हें अपने चित्र में दर्शाया, जिससे उनकी हिंदू विश्वासों में गहरी आस्था झलकती है।
- रंगों को विशेष महत्व दिया गया है — गहरा लाल पृष्ठभूमि, सफेद धोती, हरा और भूरा अग्रभाग चित्र को आकर्षक बनाते हैं।
- चित्र के केंद्र में सफेद आकृति है, जिसके चारों ओर काली और भूरी आकृतियाँ हैं। गहरा लाल पृष्ठभूमि सावधानीपूर्वक चित्रित की गई है।

अमृता शेरगिल:

- वे 20वीं शताब्दी की आधुनिक भारतीय कला की महान हस्ती थीं।
- उनके पिता का नाम सरदार उमराव सिंह शेरगिल और माता हंगरी की लेडी एंटोनेटले थीं।
- उन्होंने अपने प्रारंभिक वर्ष यूरोप में बिताए और पेरिस में कला की शिक्षा ली।
- वे मोदिग्लियानी और गॉगैं जैसे पोस्ट-इंप्रेशनिस्ट चित्रकारों से प्रभावित थीं।
- उन्होंने कांगड़ा लघुचित्र और अजंता भित्तिचित्रों से प्रेरणा ली।
- उनके मानव चित्रों में गहरी भावनाएँ और अभिव्यक्ति दिखाई देती हैं।
- दक्षिण भारत की यात्रा से प्रेरित उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं:

    - द ब्राइड्स टॉयलेट
    - द ब्रह्मचारी**ज**
    - साउथ इंडियन विलेजर्स गोइंग टू मार्केट
- उन्होंने केवल 7 वर्षों तक कार्य किया।
- उनकी चित्रकला में पश्चिमी प्रशिक्षण और भारतीय विषयों का सुंदर मिश्रण था।

8.3 द एट्रियम

शीर्षक: **द एट्रियम**

माध्यम: **कागज़ पर जल रंग**

तिथि: **1920**

कलाकार: **गगनेन्द्रनाथ टैगोर**

- 'द एट्रियम' चित्र गगनेन्द्रनाथ टैगोर द्वारा जल रंगों से कागज़ पर बनाया गया।
- यह चित्र एक असाधारण कलाकृति है, जिसमें क्यूबिज्म के प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।
- इस चित्र में प्रकाश और रंगों के अद्वितीय संयोजन से उत्पन्न प्रभावों को दर्शाया गया है।
- इसमें विभिन्न रंगों और छायाओं का प्रयोग किया गया है।

अति लघु उत्तर प्रकार प्रश्न

प्र1. भारतीय कला के इतिहास में किस कलाकारों ने अपनी छाप छोड़ी?

उत्तर: नंदलाल बोस, जामिनी रॉय, अमृता शेरगिल, गगनेन्द्रनाथ टैगोर, राजा रवि वर्मा

प्र2. 'हंस दमयंती' चित्र किस चित्रकार ने बनाया?

उत्तर: राजा रवि वर्मा

प्र3. 'हंस दमयंती' चित्र का माध्यम क्या है?

उत्तर: कैनवास पर तेल रंग

प्र4. 'हंस दमयंती' चित्र में क्या दर्शाया गया है?

उत्तर: दमयंती हंस के माध्यम से नल का संदेश सुन रही है

प्र5. राजा रवि वर्मा की प्रसिद्ध कृति का नाम बताइए।

उत्तर: हंस दमयंती

प्र6. अमृता शेरगिल किस यूरोपीय शैली से प्रभावित थीं?

उत्तर: **उत्तर प्रभाववाद** (पोस्ट इम्प्रेशनिस्ट)

प्र7. 'ब्रह्मचारी' चित्र किस माध्यम से बनाया गया है?

उत्तर: कैनवास पर तेल रंग

प्र8. 'ब्रह्मचारी' चित्र में कितनी आकृतियाँ हैं?

उत्तर: पाँच

प्र9. 'द एट्रियम' चित्र में किस यूरोपीय शैली का प्रभाव दिखाई देता है?

उत्तर: घनवाद (क्यूबिज्म)

प्र10. 'द एट्रियम' चित्र किस माध्यम से बनाया गया है?

उत्तर: कागज़ पर जल रंग

दीर्घ उत्तर प्रकार प्रश्न

प्र1. भारत में आधुनिक कला आंदोलनों के विकास का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

- भारत में आधुनिक कला आंदोलन का विकास 19वीं और 20वीं शताब्दी में हुआ।
- यूरोपीय तेल चित्रकला ने पारंपरिक भित्ति चित्र और लघु चित्रकला का स्थान ले लिया।
- बाद में कलाकारों ने भारत की समृद्ध विरासत की ओर देखा और भारतीय लोककला व परंपराओं पर आधारित राष्ट्रीय शैली बनाई।
- राजा रवि वर्मा ने भारतीय विषयों को पश्चिमी तकनीकों से जोड़ा।
- अबनीन्द्रनाथ टैगोर ने नई भारतीय शैली की स्थापना की जिससे बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट का उदय हुआ।
- कलाकार नंदलाल बोस और बिनोद बिहारी मुखर्जी ने राष्ट्रीय आंदोलन का समर्थन किया।
- जामिनी रॉय ने लोककला को आधुनिक रूप दिया और रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अभिव्यक्ति और भावना को जोड़ा।
- अमृता शेरगिल ने भारतीय और पश्चिमी परंपराओं का मिश्रण प्रस्तुत किया।

प्र2. राजा रवि वर्मा की चित्रों के विषयों का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

- राजा रवि वर्मा ने भारतीय विषयों को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया और इसमें उन्होंने पश्चिमी शैली अपनाई।
- वे उस समय के लोकप्रिय और विशिष्ट कलाकार थे जो भारतीय कला में यूरोपीय विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते थे।
- उनके कार्यों की विशेषता पौराणिक विषयों में है।
- उनके चित्रों में भारतीय देवी-देवताओं की छवियाँ आज भी मंदिरों और घरों में देखी जाती हैं।
- ये चित्र कैलेंडर और पोस्टरों में भी दर्शाए जाते हैं।
- दुष्यंत-शकुंतला, नल-दमयंती और महाभारत की विभिन्न कथाएँ उनके चित्रों में विशेष स्थान रखती हैं।

प्र3. 'ब्रह्मचारी**ज**' चित्र की संरचना का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

- 'ब्रह्मचारी**ज**' चित्र अमृता शेरगिल द्वारा बनाया गया है।

- यह चित्र पारंपरिक दक्षिण भारत में प्रचलित हिंदू रीति-रिवाजों और विश्वासों का सुंदर उदाहरण है।
- चित्र में पाँच पुरुष छात्रों को हिंदू विश्वासों में पूर्ण आस्था के साथ दर्शाया गया है।
- चित्र में पाँच पुरुष आकृतियाँ दिखाई गई हैं।
- केंद्र में सफेद आकृति है, जिसके चारों ओर काली और भूरी आकृतियाँ हैं।
- पृष्ठभूमि गहरे लाल रंग की है।
- सफेद धोती, तटस्थ अग्रभाग, शरीर के रंग और पृष्ठभूमि के रंगों का संयोजन चित्र को आकर्षक बनाता है।

प्र4. 'हंस दमयंती' चित्र का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

- 'हंस दमयंती' राजा रवि वर्मा की सबसे प्रसिद्ध कृतियों में से एक है।
- उन्होंने यह चित्र 1899 में कैनवास पर तेल रंगों से बनाया।
- दमयंती लाल साड़ी पहने हुए है और वह अपने प्रेमी नल का संदेश एक हंस के माध्यम से सुन रही है।
- हंस दमयंती को नल के प्रेम की प्रशंसा करता है।

सही या गलत

1. राजा रवि वर्मा का जन्म केरल में हुआ था। — **सही**
2. 'ब्लैक लाइन्स' राजा रवि वर्मा की प्रसिद्ध कृति है। — **गलत**
3. दमयंती को एक सुंदर स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है। — **सही**
4. दमयंती ने लाल साड़ी पहनी है। — **सही**
5. दमयंती हंस के माध्यम से नल का संदेश सुन रही है। — **सही**
6. 'हंस दमयंती' चित्र राजा रवि वर्मा ने बनाया। — **सही**

रिक्त स्थान भरिए

1. अमृता शेरगिल ने 'ब्रह्मचारी**ज**' चित्र ____________________ माध्यम से बनाया।
2. अमृता शेरगिल ने 'ब्रह्मचारी**ज**' चित्र में ____________________ विश्वासों में पूर्ण आस्था दर्शाई।

उत्तर:

1. **तेल रंग**
2. **हिंदू**

पाठ-9

समकालीन भारतीय कला

सामान्य विवरण

- मुगल साम्राज्य और मध्यकालीन कला के अंत के बाद, ब्रिटिश राज के समय भारत में आधुनिक भारतीय कला की शुरुआत हुई।
- आधुनिक कला में पश्चिमी तकनीकों और भारतीय आध्यात्मिकता का समन्वय दिखाई देता है।
- इस काल में कलाकारों के समूह बने, जैसे **कलकत्ता ग्रुप** (कलाकार – प्रदोषदास गुप्ता, निरोद मजूमदार, परितोष सेन आदि), जिसकी पहली प्रदर्शनी 1943 में हुई।
- **प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप (PAG)** की स्थापना 1947 में हुई, जिसके प्रमुख कलाकार थे – एफ.एन. सूजा, एम.एफ. हुसैन, एस.एच. रज़ा, के.एच. आरा, एच.ए. गाडे और एस.के. बकरे।
- आधुनिक भारतीय कला के प्रमुख कलाकारों में कृष्णा रेड्डी, बिनोद बिहारी मुखर्जी, एफ.एन. सूजा, के.सी.एस. पनिकर शामिल हैं।

9.1 व्हर्लपूल

शीर्षक: **व्हर्लपूल**

कलाकार: **कृष्णा रेड्डी**

काल: **1962**

आकार: **37.5 सेमी × 49.5 सेमी**

माध्यम: **कागज़ पर उत्तिकर्ण आकृति**

- कृष्णा रेड्डी अपने समय के सबसे प्रसिद्ध प्रिंट मेकर माने जाते थे।
- वे शांतिनिकेतन के कला भवन के छात्र थे।
- 'व्हर्लपूल' उनकी प्रसिद्ध कृति है।
- यह चित्र इनटालियो तकनीक से बनाया गया है।
- इस तकनीक में प्लेट की सतह नहीं छपती, बल्कि खुदी हुई जगह में स्याही भरकर छपाई की जाती है।
- पहले तांबे या जिंक की प्लेट पर चित्र बनाया जाता है, फिर उस पर स्याही लगाई जाती है।
- इसके बाद कठोर वस्तु से खरोंच कर, गीले कागज़ को प्लेट पर रखकर मशीन से दबाया जाता है जिससे चित्र उभरता है।
- इस चित्र का मुख्य उद्देश्य प्रकृति के प्रभावों को दर्शाना है।
- चित्र के अनुसार, सब कुछ एक ब्रह्मांडीय भंवर में स्थित है।

चित्र मुद्रण (प्रिंट मेकिंग)

- भारत में छपाई की कला का विकास 19वीं शताब्दी के अंत में हुआ।
- भारतीय कलाकारों ने प्रिंट मेकिंग में एचिंग, ड्राई पॉइंट, एक्वाटिंट, इनटालियो और लिथोग्राफी तकनीकों का प्रयोग किया।
- प्रिंट मेकिंग का मुख्य लाभ एक ही चित्र की कई प्रतियाँ बनाना है।
- राजा रवि वर्मा ने अपने चित्रों को ओलियोग्राफ तकनीक से छापा।

9.2 मीडिवल सेंट्स

शीर्षक: **मीडिवल सेंट्स**

कलाकार: **बिनोद बिहारी मुखर्जी**

काल: **1947**

माध्यम: **फ्रेस्को बुयोनो**

- यह चित्र शांतिनिकेतन के हिंदी भवन की दीवार पर बना हुआ है।
- इसमें भारत के विभिन्न धर्मों के संतों को दर्शाया गया है।
- दीवार को चित्र के आकार के अनुसार डिज़ाइन किया गया है।
- चित्र में लंबी आकृतियाँ लय और ताल में दिखाई देती हैं, जैसे बहती नदी की गति।
- आकृतियों की लंबाई उनकी आध्यात्मिकता को दर्शाती है।
- बड़ी आकृतियाँ महानता का प्रतीक हैं, जबकि छोटी आकृतियाँ दैनिक गतिविधियों को दर्शाती हैं।
- चित्र में भूरे, पीले, ओखर और मिट्टी जैसे रंगों का प्रयोग किया गया है।

बिनोद बिहारी मुखर्जी

- 'मीडिवल सेंट्स' बिनोद बिहारी मुखर्जी द्वारा बनाई गई चित्रकृति है।
- वे बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट के चित्रकार नंदलाल बोस के शिष्य थे।
- उन्होंने सूर्य से संबंधित प्राकृतिक पहलुओं पर आधारित चित्र बनाए।
- बचपन से उनकी आँखें कमजोर थीं और जीवन के अंत में वे नेत्रहीन हो गए, लेकिन उनकी रचनात्मक शक्ति पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
- उन्होंने जापान से लैंडस्केप तकनीक सीखी और सरल तार्किक रेखाओं को अपनाया।
- उनकी रेखाओं में कैलीग्राफी की गुणवत्ता थी।
- दृष्टि खोने के बाद भी उन्होंने शांतिनिकेतन में विशाल मुरल कला भवन का निर्माण किया।

◆ 9.3 वर्डस एण्ड सिंबल्स (शब्द और प्रतीक)

शीर्षक: **वर्ड्स एण्ड सिंबल्स (शब्द और प्रतीक)**

कलाकार: **के.सी.एस. पनिकर**

माध्यम: **बोर्ड पर तेल रंग**

आकार: **43 सेमी × 124 सेमी**

तिथि: **1965**

- यह चित्र 'शब्द और प्रतीक' श्रृंखला का प्रसिद्ध चित्र है।
- यह चित्र लकड़ी के बोर्ड पर तेल रंगों से बनाया गया है।
- इसे के.सी.एस. पनिकर ने 1965 में बनाया।
- उन्होंने चित्र में गणितीय प्रतीक, अरबी अंक, रोमन और मलयालम लिपि का प्रयोग किया।
- चित्र में रंग प्रतीकात्मक हैं।
- यह एक प्रयोगात्मक चित्र है जिसमें स्थान को कैलीग्राफी से भरा गया है।
- इसमें तांत्रिक प्रतीकों का भी प्रयोग किया गया है।

के.सी.एस. पनिकर (1911–1977)

- दक्षिण भारत में के.सी.एस. पनिकर को आधुनिक कलाकार माना जाता है।
- वे मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट में डी.पी. रॉय चौधरी के शिष्य थे।
- उन्होंने भारत का पहला कला ग्राम 'चोलामंडलम' चेन्नई के पास स्थापित किया।
- उनकी शैली यथार्थवादी से ज्यामितीय तक कई चरणों से गुज़री।

◆ 9.4 लैंडस्केप इन रेड

कलाकार: **एफ.एन. सूजा**

काल: **1961**

माध्यम: **तेल रंग**

- 'लैंडस्केप इन रेड' एफ.एन. सूजा द्वारा 1961 में तेल रंगों से बनाया गया चित्र है।
- यह चित्र उनके प्राकृतिक चित्रों में विशेष स्थान रखता है।
- इसमें उन्होंने एक शहर का दृश्य चित्रित किया है जो एक जंगल जैसा प्रतीत होता है।
- चित्र में प्रमुख रंग लाल है, जिसमें कुछ स्थानों पर हरे रंग की झलक है।
- परिप्रेक्ष्य का कोई नियम नहीं अपनाया गया है, फिर भी चित्र में गहराई स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

फ्रांसिस न्यूटन सूजा

- एफ.एन. सूजा का जन्म गोवा में हुआ था।
- उन्होंने भारतीय कला को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाया।
- उन्होंने अपनी कला के माध्यम से धार्मिक और सामाजिक बुराइयों का विरोध किया।
- वे पश्चिमी कलाकारों जैसे पिकासो और मातिस से प्रभावित थे।
- उन्हें प्राकृतिक दृश्यों से विशेष प्रेम था।
- उन्होंने 1947 में 'प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप' की स्थापना की।
- उनकी शैली भारतीय मंदिर मूर्तिकला रूपों को पश्चिमी कला से जोड़ती है।

लघु उत्तर प्रकार प्रश्न

प्र1. आधुनिक कला की शुरुआत कब हुई?

उत्तर: मुगल साम्राज्य और मध्यकालीन कला के अंत के बाद आधुनिक कला की शुरुआत हुई

प्र2. आधुनिक कला के कलाकार समूह का नाम बताइए?

उत्तर: कलकत्ता ग्रुप, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप

प्र3. आधुनिक कला के कलाकारों के नाम लिखिए?

उत्तर: कृष्णा रेड्डी, बिनोद बिहारी मुखर्जी, के.सी.एस. पनिकर

प्र4. भारत में प्रिंट मेकिंग तकनीक कब विकसित हुई?

उत्तर: 19वीं शताब्दी के अंत में

प्र5. कलाकारों द्वारा प्रयोग की गई प्रिंटिंग तकनीकों के नाम लिखिए?

उत्तर: एसिड राइटिंग, ड्राई पॉइंट, लिथोग्राफी, ओलियोग्राफी

प्र6. कृष्णा रेड्डी ने 'व्हर्लपूल' चित्र में कौन सी प्रिंटिंग तकनीक अपनाई?

उत्तर: इनटालियो तकनीक

प्र7. बिनोद बिहारी मुखर्जी के गुरु का नाम क्या था?

उत्तर: नंदलाल बोस।

प्र8. 'मीडिएवल सेंट्स' चित्र में कौन-कौन से रंगों का प्रयोग हुआ है?

उत्तर: भूरा, पीला, ओखर और मिट्टी जैसे रंग

प्र9. बिनोद बिहारी मुखर्जी की शारीरिक समस्या क्या थी?

उत्तर: उनकी आँखें बचपन से कमजोर थीं और बाद में वे नेत्रहीन हो गए

प्र10. दक्षिण भारतीय कला और संस्कृति में के.सी.एस. पनिकर का योगदान क्या है?

उत्तर: के.सी.एस. पनिकर दक्षिण भारत में आधुनिक कला के विकास में अग्रणी कलाकार हैं

प्र11. चोलामंडलम क्या है और इसका पनिकर से क्या संबंध है?

उत्तर: चोलामंडलम चेन्नई में के.सी.एस. पनिकर द्वारा स्थापित पहला कला ग्राम है

प्र12. पनिकर की चित्रकला के बारे में लिखिए।

उत्तर: ‘शब्द और प्रतीक’ एक प्रयोगात्मक चित्र है जिसमें स्थान को कैलीग्राफी से भरा गया है

प्र13. ‘शब्द और प्रतीक’ चित्र का माध्यम क्या है?

उत्तर: लकड़ी के बोर्ड पर तेल रंग

प्र14. एफ.एन. सूजा किस कलाकारों की कला से प्रभावित थे?

उत्तर: पिकासो और मातिस

प्र15. सूजा की चित्रकृति ‘लैंडस्केप इन रेड’ की मुख्य विशेषता क्या है?

उत्तर: यह चित्र एक शहर का दृश्य दर्शाता है जो जंगल जैसा प्रतीत होता है

दीर्घ उत्तर प्रकार प्रश्न

प्र1. कृष्णा रेड्डी की चित्रकृति ‘व्हर्लपूल’ के बारे में क्या जानते हैं?

उत्तर:

- कृष्णा रेड्डी ने यह चित्र 1962 में बनाया।
- यह कागज़ पर इनटालियो तकनीक से बना है।
- इसमें उन्होंने मन में प्रकृति के प्रभावों को दर्शाया है।
- चित्र में आकृतियाँ अमूर्त हैं।
- तारे, फूल और बादलों जैसी आकृतियाँ स्पष्ट नहीं हैं।
- राहत शैली की इनटालियो तकनीक इस चित्र की मुख्य सुंदरता है।

प्र2. भारत में प्रिंटिंग तकनीक कब विकसित हुई? किसी एक तकनीक का विवरण दीजिए।

उत्तर:

- भारत में प्रिंटिंग तकनीक 19वीं शताब्दी के अंत में विकसित हुई।
- भारतीय कलाकारों ने एसिड राइटिंग, ड्राई पॉइंट, इनटालियो और एंग्रेविंग तकनीकों का प्रयोग किया।
- ‘व्हर्लपूल’ कृष्णा रेड्डी की प्रसिद्ध कृति है।
- यह चित्र इनटालियो तकनीक से बनाया गया है।
- पहले तांबे या जिंक की प्लेट पर चित्र बनाया जाता है, फिर उस पर स्याही लगाई जाती है।
- इसके बाद कठोर वस्तु से खरोंच कर, गीले कागज़ को प्लेट पर रखकर मशीन से दबाया जाता है जिससे चित्र उभरता है।
- इस चित्र का मुख्य उद्देश्य प्रकृति के प्रभावों को दर्शाना है।
- चित्र के अनुसार, सब कुछ एक ब्रह्मांडीय भंवर में विलीन हो जाता है।

प्र3. उस भारतीय कलाकार के बारे में लिखिए जो नेत्रहीन हो गए थे।

उत्तर:

- बिनोद बिहारी मुखर्जी की आँखें बचपन से कमजोर थीं और बाद में वे पूरी तरह नेत्रहीन हो गए, लेकिन उनकी रचनात्मक शक्ति पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

- ‘मीडिएवल सेंट्स’ चित्र उन्होंने शांतिनिकेतन के हिंदी भवन की दीवार पर बनाया।
- यह चित्र भारत के विभिन्न धर्मों के संतों को दर्शाता है।
- दीवार के आकार के अनुसार मानव आकृतियाँ लंबी हैं और बहती नदी की गति जैसी लय और ताल में दिखाई देती हैं।

प्र4. एफ.एन. सूजा की चित्रकृति ‘लैंडस्केप इन रेड’ के बारे में लिखिए।

उत्तर:

- यह चित्र एफ.एन. सूजा ने 1961 में तेल रंगों से बनाया।
- उन्हें प्राकृतिक दृश्यों से विशेष प्रेम था।
- यह चित्र उनके प्राकृतिक चित्रों में विशेष स्थान रखता है।
- चित्र में एक शहर का दृश्य है जो जंगल जैसा प्रतीत होता है।
- चित्र में मुख्य रूप से लाल रंग का प्रयोग हुआ है, कुछ स्थानों पर हरे रंग की झलक है।
- परिप्रेक्ष्य का कोई नियम नहीं अपनाया गया है, फिर भी चित्र में गहराई स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।
- इस चित्र के लिए उनकी तुलना पिकासो से की गई।

सही या गलत

1. भारत में प्रिंटिंग तकनीक 19वीं शताब्दी के अंत में विकसित हुई। — **सही**
2. कृष्णा रेड्डी अपने समय के प्रसिद्ध प्रिंट मेकर माने जाते हैं। — **सही**
3. ‘व्हर्लपूल’ कृष्णा रेड्डी की प्रसिद्ध कृति है। — **सही**
4. ‘व्हर्लपूल’ में कृष्णा रेड्डी ने प्रकृति के प्रभावों को नहीं दर्शाया है। — **गलत**

रिक्त स्थान भरिए

1. ‘मीडिवल सेंट्स’ चित्र ____________________ द्वारा शांतिनिकेतन के हिंदी भवन की दीवार पर बनाया गया है।
2. यह चित्र भारत के ____________________ को दर्शाता है।
3. ‘लैंडस्केप इन रेड’ चित्र ______________________ द्वारा बनाया गया है।
4. एफ.एन. सूजा ने अपनी कला के माध्यम से ______________________ और ______________________ बुराइयों का विरोध किया।

उत्तर:

1. **बिनोद बिहारी मुखर्जी**
2. **विभिन्न संतों**
3. **एफ.एन. सूजा**
4. **धार्मिक और सामाजिक**

नमूना प्रश्न पत्र - 1

अनुभाग A

निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर लिखिए: (प्रत्येक प्रश्न 1 अंक का है)

1. सिंधु घाटी सभ्यता की कांस्य निर्मित नृत्य करती हुई बालिका की मूर्ति किस स्थल से प्राप्त हुई है?
    1. हड़प्पा b) मोहनजोदड़ो
    2. लोथल d) रोपड़

2. भगवान बुद्ध को किस काल में प्रतीकात्मक रूप में दर्शाया गया है?
    1. वाकाटक b) मथुरा
    2. हीनयान d) गांधार

3. 'क्यूबिज़्म' का जनक किसे कहा जाता है?
    1. क्लॉद मोने b) ऑगस्ट रेनॉयर
    2. पॉल सेज़ान d) राजा रवि वर्मा

4. 'मोनालिसा' चित्र किसने बनाया था?
    1. सैंड्रो बोटिचेली b) माइकल एंजेलो
    2. राफेल d) लियोनार्डो दा विंची

5. कोणार्क का सूर्य मंदिर किस वंश के राजा द्वारा बनवाया गया था?
    1. गंगा वंश, नरसिंहदेव प्रथम b) पल्लव वंश
    2. मौर्य वंश d) चोल वंश

6. सही विकल्प पर टिक लगाइए:
    1. पिएटा – रेम्ब्रांट
    2. मोनालिसा – लियोनार्डो दा विंची
    3. वीनस – मोने
    4. नाइट वॉच – राफेल

अनुभाग B

7. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (5 अंक)

अजंता की गुफाएँ महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में स्थित हैं। इन गुफाओं की खोज एक ब्रिटिश अधिकारी ने शिकार करते समय संयोगवश की थी। कुल 30 पूर्णतः शिलाखंडों को काटकर बनाई गई गुफाएँ अजंता में पाई गईं। इनमें से कुछ गुफाएँ प्रार्थना कक्ष (चैत्य) और कुछ मठ (विहार) के रूप में प्रयुक्त होती थीं। अजंता की भित्तिचित्रकला विश्व प्रसिद्ध है। इन चित्रों में मुख्यतः दो कालखंड दिखाई देते हैं। पहले हीनयान काल में भगवान

बुद्ध को प्रतीकात्मक रूप में दर्शाया गया है, जबकि दूसरे महायान काल में उन्हें मानव रूप में चित्रित किया गया है।

1. अजंता में कुल ____________ गुफाएँ हैं।
2. अजंता की चित्रकला ____________ कालखंडों में पूर्ण हुई।
3. यह कार्य मुख्यतः ग्रामीण महिलाओं द्वारा किया गया था। अजंता की गुफाएँ ____________ जिले में स्थित हैं।
4. हीनयान काल में भगवान बुद्ध को ____________ रूप में दर्शाया गया है।
5. महायान काल में भगवान बुद्ध को ____________ रूप में दर्शाया गया है।

8. घनवाद 20वीं शताब्दी की एक प्रमुख कला आंदोलन था। इसकी शुरुआत पिकासो और पॉल सेज़ेन ने की थी। इस आंदोलन में कलाकारों ने त्रि-आयामी यथार्थ को ज्यामितीय आकारों और सरल रूपों के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया। यथार्थवादी आकृतियों को दिखाने के बजाय, क्यूबिस्ट चित्रकारों ने घन, शंकु, बेलन आदि का उपयोग किया। इस शैली में वस्तुओं की बाहरी सुंदरता की अपेक्षा उनके रूप और संरचना पर अधिक ध्यान दिया गया। इन कलाकृतियों को बनाने में प्रायः तेल या जल रंगों का उपयोग किया गया।
9. घनवाद के संस्थापक पिकासो और ब्राक थे। (सही/गलत)
2. घनवादी कलाकारों ने त्रि-आयामी यथार्थ को सरल रूपों में दर्शाने का प्रयास किया। (सही/गलत)
3. घनवाद में वस्तुओं की बाहरी सुंदरता पर अधिक ध्यान दिया गया। (सही/गलत)
4. सेज़ेन घनवाद का पूर्ववर्ती था। (सही/गलत)

अनुभाग C

9. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 40 से 50 शब्दों में लिखिए: (प्रत्येक प्रश्न 2 अंक)

i. दक्षिण भारतीय समकालीन कला के विकास पर एक निबंध लिखिए।

अथवा

'क्यूबिज़्म' पर एक विस्तृत टिप्पणी लिखिए।

10. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर 50 से 60 शब्दों में लिखिए: (3 अंक)

1. सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त 'नृत्य करती बालिका' पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

अथवा

जैन मूर्तिकला की मुख्य विशेषताएँ लिखिए।

11. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर 70 से 80 शब्दों में लिखिए: (4 अंक)

1. 'स्टारी नाइट' पर एक विस्तृत टिप्पणी लिखिए।

अथवा

'मोनालिसा' चित्रकला का वर्णन लिखिए।

नमूना प्रश्न पत्र - 2

चित्रकला (225)

अनुभाग A

प्रश्न के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए: (प्रत्येक प्रश्न 1 अंक)

1. अर्जुन की तपस्या का दूसरा नाम क्या है?
1. गंगा अवतरण b) कांचीपुरम
2. रासलीला d) श्रृंगार
2. 'श्रृंगार' चित्र में क्या दर्शाया गया है?
1. एक वीनस को शंख से जन्म लेते हुए दिखाया गया है।
2. एक दुल्हन को उसकी शादी के लिए सजाया जा रहा है।
3. राजकुमारी को ढोल बजाते हुए दिखाया गया है।
4. दर्शक का स्वागत करते हुए दिखाया गया है।
3. 'फुलकारी' किस स्थान की प्रसिद्ध कला है?
1. दिल्ली c) पंजाब
2. बंगाल d) गुजरात
4. मोनालिसा को किस डिज़ाइन में दर्शाया गया है?
1. त्रिकोण c) वर्ग
2. सभी d) पिरामिड
5. बैल के सिर की सबसे विशिष्ट विशेषता क्या है?
1. पॉलिश c) नग्न
2. मिट्टी का रंग d) गर्दन
6. कलाकार से संबंधित चित्रकला की पहचान कीजिए:
1. ---------------- और रेम्ब्रांट
2. ---------------और अमृता शेरगिल
3. -----------------और राजा रवि वर्मा

अनुभाग B

7. गद्यांश पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

फुलकारी का वास्तविक अर्थ है 'फूलों का कार्य'। यह कार्य मुख्यतः पंजाब की ग्रामीण महिलाओं द्वारा किया जाता है। फुलकारी डिज़ाइन के संगीतात्मक रूपांकनों की आकृति ज्यामितीय होती है। प्रमुख रंग होता है—पंजाब में पकती हुई गेहूं की फसल का सुनहरा रंग। लंबवत और क्षैतिज टांकों के विपरीत संयोजन से सुंदर डिज़ाइन बनता है। लाल कपड़े पर

सुनहरे पीले और चांदी जैसे सफेद धागों से सितारे बनाए जाते हैं। मूल रूपांकन में एक बड़ा सितारा होता है, जिसके चारों ओर छोटे सितारे होते हैं, जिससे डिज़ाइन में हीरे के आकार की जगह बनती है।

1. फुलकारी का वास्तविक अर्थ ____________________ होता है।
2. ____________________ और ____________________ टांकों का संयोजन सुंदर डिज़ाइन बनाता है।
3. यह कार्य मुख्यतः ____________________ की ग्रामीण महिलाओं द्वारा किया जाता है।
4. पंजाब में प्रमुख रंग ____________________ होता है।
5. डिज़ाइन में ____________________ आकार की जगह बनती है।

8. गद्यांश पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (प्रत्येक प्रश्न 1 अंक)

लियोनार्डो दा विंची एक इतालवी चित्रकार थे। उन्हें वैज्ञानिक और कलाकार दोनों माना जाता है। उनका सबसे प्रसिद्ध कार्य 'मोनालिसा' है। लियोनार्डो ने इस चित्र को पिरामिड डिज़ाइन में बनाया। मोनालिसा के चित्र में चेहरे के बाल, यहां तक कि भौंहें और पलकों को भी नहीं दिखाया गया है, फिर भी महिला के चेहरे पर मुस्कान आँखों की ओर देखने पर अधिक प्रभावशाली लगती है, बजाय मुंह की ओर देखने पर। चित्र के पीछे एक विशाल परिदृश्य है जिसमें बर्फीले पर्वत, घाटी और घुमावदार नदी दर्शाई गई है।

1. चित्र के पीछे युद्ध का दृश्य है। (सही/गलत)
2. विंची एक इतालवी चित्रकार थे। (सही/गलत)
3. यह चित्र पिरामिड डिज़ाइन में बनाया गया है। (सही/गलत)
4. मोनालिसा चित्र में उसकी भौंहें और पलकों को दिखाया गया है। (सही/गलत)

अनुभाग C

विकल्प देखकर सभी प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

(उत्तर न्यूनतम 30 शब्दों में लिखें)

9. होयसला काल को शिल्पकला का युग क्यों कहा जाता है?

अथवा

समकालीन भारतीय कलाकारों द्वारा अपनाई गई विधियों और तकनीकों का वर्णन कीजिए। (2 अंक)

10. पुनर्जागरण से आप क्या समझते हैं? इस काल की विशेषताओं का वर्णन कीजिए। (2 अंक)

11. कंथा कढ़ाई (Kantha Stitching) पर एक अनुच्छेद लिखिए। (2 अंक)

12. कोणार्क का सूर्य मंदिर किसने बनवाया था? यह मंदिर कहाँ स्थित है? (2 अंक)

विकल्प देखकर सभी प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

(उत्तर न्यूनतम 50 शब्दों में लिखें)

13. टेराकोटा क्या है? किसी एक ऐसे मंदिर का वर्णन कीजिए जो टेराकोटा टाइलों से सजाया गया है।

अथवा

'द बर्थ ऑफ वीनस' चित्र में वीनस को किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है? (3 अंक)

विकल्प देखकर सभी प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

(उत्तर न्यूनतम 70 शब्दों में लिखें)

14. 'नृत्य करती बालिका' पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

अथवा

'द नाइट वॉच' चित्रकला का वर्णन कीजिए। (4 अंक)

नमूना प्रश्न पत्र - 3

चित्रकला (225)

अनुभाग A

प्रश्न के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए: (प्रत्येक प्रश्न 1 अंक)

1. अर्जुन की तपस्या का दूसरा नाम क्या है?
1. क्यूबिज़्म b) सुर्रियलिज़्म
2. अमूर्त d) इम्प्रेशनिज़्म
2. वान गॉग की प्रसिद्ध कृतियों के नाम बताइए:
1. सनफ्लावर, पोटैटो ईटर b) डांस क्लास
2. मोलां दे ला गैलेट d) वॉटर लिलीज़
3. 'पर्सिस्टेंस ऑफ मेमोरी' चित्र किस कलाकार द्वारा बनाया गया है?
1. डाली b) कांडिंस्की
2. पिकासो d) विंची
4. 'हंस दमयंती' चित्र का माध्यम क्या है?
1. कैनवास पर तेल रंग b) जल रंग
2. टेम्परा d) वैक्स रंग
5. वह कलाकार कौन था जिसे बचपन से ही दृष्टि की कमजोरी थी?
1. सूज़ा b) बिनोद बिहारी मुखर्जी
2. पनिकर d) हुसैन
6. सही युग्म का चयन कीजिए:
1. मैन विद वायलिन –---- साल्वाडोर डाली
2. मोलां दे ला गैलेट –------ ऑगस्ट रेनॉयर
3. पर्सिस्टेंस ऑफ मेमोरी) – वान गॉग
4. स्टाररी नाइट – पिकासो

अनुभाग B

7. गद्यांश पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (प्रत्येक प्रश्न 1 अंक)

राजा रवि वर्मा भारत के सबसे प्रसिद्ध कलाकारों में से एक थे। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत केरल के एक छोटे से गाँव किलिमानूर से की थी। राजा रवि वर्मा अपने समय के लोकप्रिय और प्रतिष्ठित कलाकार थे, जो

भारतीय कला में यूरोपीय दृष्टिकोण वाले कलाकारों का प्रतिनिधित्व करते थे। वे जलरंग और तेल चित्रण तकनीकों के लिए प्रसिद्ध थे। उनके कार्यों में पौराणिक नायिकाओं का प्रमुख स्थान रहा है।

1. राजा रवि वर्मा भारत के सबसे ______________________ कलाकारों में से एक हैं।
2. उन्होंने अपने करियर की शुरुआत केरल के ____________________ नामक गाँव से की थी।
3. राजा रवि वर्मा _____________________ और _______________________ तकनीकों के लिए प्रसिद्ध थे।
4. राजा रवि वर्मा के कार्यों में _____________________ नायिकाएँ प्रमुख हैं।
5. वे भारतीय कला में ______________________ का प्रतिनिधित्व करते हैं।

8. गद्यांश पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (प्रत्येक प्रश्न 1 अंक)

बिनोद बिहारी मुखर्जी नंदलाल बोस के शिष्य थे, जो बंगाल स्कूल के प्रसिद्ध चित्रकार थे। उन्हें प्रकृति की सुंदरता से गहरा प्रेम था और उन्होंने अपने चित्रों को उसी सौंदर्य पर आधारित किया। उन्होंने जापान से प्राकृतिक दृश्यों को चित्रित करना सीखा। उन्होंने जापानी कलाकारों की सरल और सूक्ष्म रेखाओं के उपयोग को अपनाया। बिनोद बिहारी बचपन से ही दृष्टिहीनता से पीड़ित थे और अपने जीवन के अंतिम वर्षों में पूरी तरह अंधे हो गए थे।

1. बिनोद बिहारी बंगाल स्कूल के चित्रकार थे। (सही/गलत)
2. उन्हें प्रकृति की सुंदरता से प्रेम नहीं था। (सही/गलत)
3. वे अपने जीवन के अंतिम चरण में अंधे हो गए थे। (सही/गलत)
4. उन्होंने जापान से प्राकृतिक दृश्य चित्रित करना नहीं सीखा। (सही/गलत)

अनुभाग C

विकल्प देखकर सभी प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

(उत्तर न्यूनतम 30 शब्दों में लिखें)

9. वान गॉग किस देश से संबंधित थे? उनकी कुछ प्रसिद्ध चित्रकृतियाँ बताइए। (2 अंक)

10. पिकासो के दो प्रसिद्ध कालखंडों के नाम लिखिए। (2 अंक)

11. 'ब्रह्मचारीज़' नामक चित्र में कितनी आकृतियाँ हैं और इस चित्र के कलाकार का नाम बताइए। (2 अंक)

12. फ्रेस्को बुओनो तकनीक के बारे में दो पंक्तियाँ लिखिए।

अथवा

बिनोद बिहारी की शारीरिक समस्या क्या थी? (2 अंक)

विकल्प देखकर सभी प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

(उत्तर न्यूनतम 50 शब्दों में लिखें)

13. उस भारतीय कलाकार के बारे में लिखिए जो अंधे हो गए थे।

अथवा

पनिकर की किसी एक प्रसिद्ध चित्रकला का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। (3 अंक)

विकल्प देखकर सभी प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

(उत्तर न्यूनतम 70 शब्दों में लिखें)

14. 'ब्रह्मचारीज़' नामक चित्र की संरचना का वर्णन कीजिए।

अथवा

पाब्लो पिकासो के बारे में संक्षिप्त जानकारी दीजिए। (4 अंक)